ख़ुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली   ना हो जिसको खयाल आप अपनी हालत के बदलने का।

अहले सुन्नत व जमाअत का तरजमान और सूफ़ीमत का प्रचारक

49 वां

माहनामा **एहसास** जयपुर

ब-फ़ैज़े रूहानीः
सरकारे ग़ौसे आ़ज़म
रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

ब-फ़ैज़े रूहानीः
ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

पाँचवा दौर

सातवां शुमारा

● सितम्बर 2018 ई.

● ज़िल-क़ाअ़दा-ज़िल-हिज्जा 1439 हि.

चीफ एडीटर-
खालिद अयूब मिस्बाही शेरानी

एडीटर-
अ़ब्दुर-रहमान शेरानी

एक प्रति	: 25/- ₹
वार्षिक शुल्क	: 300/-₹
एजाज़ी मेम्बर शिप	: 10000/₹
आजीवन (10 वर्ष)	: 3500/- ₹
खाड़ी देशों में	: 115 SAR
अन्य देशों में	: 40 $

सम्पादकीय कार्यालय-
ख़त व किताबत एवं मनिऑर्डर भेजने का पताः
4273, ऑन-लाइन दारूल-इफ़्ता, मर्कज़ एसडीआई,
पहाड़गंज, सूरजपोल, जयपुर (राज.) 302003,मो.-9983220116

E-mail : abdulsherani@gmail.com, khalidinfo22@gmail.com

नोटः एहसास के जिन मेम्बर हज़रात की फ़ीस बाक़ी है, वो अपनी मिल्ली, अख़लाक़ी, समाजी तथा ईमानी ज़िम्मेदारी महसूस करते हुए बढ़ कर ख़ुद हमें फ़ीस भेजने की कोशिश करें या हमारे नुमाइंदों को दे दें। **इदारा**

पुरानी किताबें ज़ाया होने से बचाऐं। और सदक़ा ए जारिया का ज़रीआ बनें। यानी आप के पास पुरानी किताबें या कतबे या मख़तूतात हों और आप को उनकी ज़रूरत ना हो तो हम तक पहुँचा दें या इत्तिला फ़रमाऐं एहसास की टीम खुद आकर क्लेक्ट कर लेगी। हम अपनी सवाबदीद से हस्बे हाल एक अच्छे मसरफ़ में उन को इस्तिमाल करेंगे। **-इदारा**

नोट : हिंदी रिसाले में अ़रबी लिखना मुनासिब नहीं। इसलिए अरबी की जगह उनका तर्जमा लिखा जाता है। अ़रबी जानने के लिए अस्ल किताबों की तरफ़ रूजू करें।

जिन ग्राहकों के यहाँ एहसास मैग्ज़ीन हर महीने की 5 तारीख़ तक नहीं पहुँच पाती है वह एक बार पोस्ट ऑफ़िस से राबता करें। फिर भी ना मिले तो निम्नलिखित नम्बर पर शिकायत करें। मो.-9983220116

रजि. कार्यालय-
799, मोहल्ला शेखान,
खंडार का रास्ता
गंगापोल, जयपुर (राज.)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, मन्नान खान के लिये श्रीराम ऑफसेट-6, शॉपिंग सेंटर स्ट्रीट, माधोविलास के सामने, जोरावरसिंह गेट के पास, आमेर रोड़ जयपुर से मुद्रित एवं 799, मोहल्ला शेखान, खंडार का रास्ता, गंगापोल,जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक-मन्नान खान, नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा।

माहनामा एहसास | सितम्बर, 18

फ़ेहरिस्त

एहसास का टारगेट

अल हम्दु लिल्लाहि अ़ला एहसानिह: पिछले कुछ सालों से उर्दू में प्रकाशित होने वाला सालनामा ''एहसास'' अब हिन्दी जबान में अहले सुन्नत का तरजमान माहनामा बन चुका है। एहसास सूफ़ीमत का प्रचारक है, जो आज के पुर-फ़ितन दौर में मिल्लत की दुखती रग पे हाथ रख कर उसके दर्द का मुदावा करना चाहता है। एहसास के पास बलन्द फ़िक्र नौ जवानों की एक टीम है जो पूरे जोश और होश के साथ बे चैन दुनिया को एक बार फ़िर सूफ़ी संतों के क़दमों से जोड़ कर सुकून की दौलत आ़म करना चाहती है। अब रिवायती अंदाज़ से जीने का ज़माना ख़त्म हो चुका है आज के दौर में उसी की हुक्मरानी है जिसका एहसास ज़िंदा और ज़मीर बैदार है। मीडिया की भीड़ में एहसास की बढ़ोतरी का इसके अ़लावा और कोई मक़सद नहीं और जिस दिन एहसास भी अपना यह मक़सद गुम कर देगा, वह दिन इसका आख़री दिन होगा। दूसरे लफ़्ज़ो में एहसास का मक़सद सही और सच्चे इस्लाम यानी सूफ़ीमत को बढ़ावा देना, आ़लमे इस्लाम को एक दूसरे से जोड़ना, मुसलमानों में तालीमी बैदारी पैदा करना, उनकी आवाज़ बलन्द करना, दीनी शऊर पैदा करना, पुरानी वरासत को सामने लाना और ज़िंदगी के किसी भी विभाग से जुड़े मुसलमानों की जहाँ तक सम्भव हो, गाइडिंग करना है।

अगर आप इन अग़राज़ व मक़ासिद से इत्तिफ़ाक़ रखते हों तो एहसास आपका अपना रिसाला है, इससे ख़ुद भी जुड़ें और अपने दोस्तों को भी जोड़ने की कोशिश करें।

ताजुश्शरिआ के साथ एक अ़हद का ख़ात्मा

-चीफ एडीटर

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो रहते हैं तो पूरी क़ौम की ज़रूरत और आबरु बनकर रहते हैं और दुनिया से जाते हैं तो एक दुनिया को सोगवार छोड़ कर जाते हैं। मुर्शिदे गिरामी, वारिसे उलूमे आ़ला हज़रत हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी बरेलवी अ़लैहिर्रहमा ऐसे ही चंद गिने-चुने नुफ़ूस में से एक थे, जिनकी हयात हमारे लिए अल्लाह की नेअ़मत थी और जिनकी वफ़ात इंशा अल्लाहु तआ़ला हमारे लिए रूहानी फ़ैज़ान का सबब होगी। हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ को दुनिया हमेशा याद रखेगी और उनकी यादें सुनहरे हर्फ़ों से लिखी जाऐंगी क्योंकि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ उन लोगों में से थे जिनके सैकड़ों खुलफ़ा, हज़ारों अ़क़ीदतमंद और लाखों मुरीद हैं।

हमारे ज़माने का हर बड़ा आ़लिम जो मुफ़्ती ए आ़ज़म हिंद अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान बरेलवी अ़लैहिर्रहमा से बैअ़त का शरफ़ हासिल ना कर सका, हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से मुरीद है और सर्वे के मुताबिक़ उलमा की जितनी बड़ी तादाद हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के दामने इरशाद से वाबस्ता है, इज्तिमाई तौर पर आज की तारीख़ में किसी और पीर का हिस्सा नहीं।

आज की गहमागहमी वाली दुनिया में किसी को मामूली मक़बूलियत मिलना भी बड़ी बात है लेकिन ऐसे होशरूबा ज़माने में हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ वह थे जिन्हें दुनिया जहान के लोग ना सिर्फ़ पहचानते थे बल्कि उनसे टूट कर मोहब्बत करना अपनी आख़िरत के लिए कामयाबी की ज़मानत समझते थे, जहाँ से आपका गुज़र होता, क़ाफ़िले राह में बिछ जाते, जिस दीनी जलसे में आपका जाना हो जाता, बिना किसी ख़ास प्रचार के भी ख़ल्के ख़ुदा का एक बड़ा हुजूम जमा हो जाता और जिस मसअले पर आप अपना नज़रिया पेश कर देते, एक बड़ी तादाद उसको फ़ॉलो करने लगती। जीते जी ऐसी मक़बूलियत बहुत कम लोगों का मुक़द्दर हुआ करती है। अल्लाह का फ़रमान सच है: बेशक जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अ़मल किए, रहमान उनकी मोहब्बतें दिलों में पैदा फरमा देता है। (सूरह मरयम) हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की शख़्सियत इस आयते करीमा की अ़मली तफ़सीर थी।

हाँ! यह ज़रूर हुआ कि कुछ हवारियों ने आपकी शख़्सियत को वह मक़ाम ना दिया जो आपका क़रारे वाक़ई हक़ था और अपने हलके ज़ाती मफ़ादात के लिए ताजुश्शरीआ़ के नाम पर पूरी मिल्लत के साथ मज़ाक़ करते रहे लेकिन ज़िंदगी के अंदर भी और बादे वफ़ात भी तमाम लोगों को इस बात का ऐतिराफ़ रहा कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ वली सिफ़त इंसान हैं, उनके नाम पर अगर कुछ ग़लत हो रहा है तो इसके ज़िम्मेदार हाशिया ब्रदार हैं।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ सिर्फ़ एक मशहूर पीर या एक मशहूर ख़ानक़ाह के ज़िम्मेदार ही नहीं थे बल्कि अपने आप में इल्म व अ़मल और रूहानी फ़ैज़ान का एक जहान थे। ऐसे साहिबे इल्म जिनके इल्म पर अ़रब व

अ़जम को बजा नाज़ रहा और ऐसे साहिबे फ़ज़्ल जिन्होंने उन लोगों की आंखों को ठंडक पहुँचाई जिन्होंने हुज़ूर आ़ला हज़रत और मुफ़्ती ए आ़ज़म अ़लैहिमर्रमा को अपने माथे की आंखों से नहीं देखा था, इस बात में कोई शक नहीं कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ इल्म की तरह अ़मल में भी अपने इन असलाफ़ की मीरास थे।

आज के पुर फ़ितन दौर में यह बात इस लिए भी ज़्यादा अहम हो जाती है कि आज बिल उमूम ख़ानक़ाहों से इल्म व अ़मल रुख़सत हो चुके हैं और ख़ानक़ाही सिर्फ़ ''पिदरम सुलतान बुवद'' के नारों पर खुश हैं।

जैसे ही हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के विसाल की ख़बर आ़म हुई, जो जहाँ था, जम थम गया। अब इंतिज़ार इस बात का था कि कब आपके जनाज़े और तदफ़ीन की ख़बर मिले और कब बरेली पहुँचना हो। जब जनाज़े की इत्तिला मिली तो हिंदुस्तान के हर दूर-दराज़ कोने से मख़लूक़े खुदा बरेली के मर्कज़ में जमा होने लगी और ना सिर्फ़ हिंदुस्तान बल्कि दुनिया के तक़रीबन एक दर्जन से ज़्यादा मुल्क ऐसे थे, जहाँ से आप के जनाज़े में शिरकत के लिए लोग बरेली के शहरे मोहब्बत में जमा हुए। आ़लम यह था कि जो लोग अपना थका मांदा, टूटा हुआ और बोझल जिस्म लेकर बरेली पहुँच सकते थे, पहुँचे और जो ना पहुँच सके, वो भी एक लम्हा चैन नहीं पाते थे। हर तरफ़ ईसाले सवाब और दुआ़ओं का सिलसिला था, हर आँख नम थी, हर ज़बान पर हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का ज़िक्रे जमील था और ज़हन-ज़हन में आप ही की यादें गर्दिश कर रही थीं। एक अ़जीब हू का आ़लम था और एक अ़जीब दीवानगी का समां था।

ऐसी दीवानगी जो शायद इससे पहले मुस्लिम दुनिया के ख़्वाब व ख़याल में भी ना थी। बेशक यह मक़बूलियत इंसान की अपनी कमाई नहीं हो सकती, जब तक अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उसकी स्पेशल अ़ता ना हो।

एक ऐसा सूफ़ी मनुश इंसान जिसने कई वज़ारतें ठुकराईं, कई राजनेताओं को एक लम्हा मुँह ना लगाया, फ़िल्मी सितारों को मिलने का मौक़ा तक ना दिया और दीनी मामलात में बड़े-बड़ों को ख़ातिर में ना लाया, ऐसे फ़क़ीराना मिज़ाज मर्दे ख़ुदा का जनाज़ा दुनिया भर की तारीख़ का तारीख़ी जनाज़ा बन जाएगा, किसी को उम्मीद भी ना थी।

जनाज़े में शरीक होने वालों की सही तादाद का इल्म तो अल्लाह को है लेकिन इतना ज़रूर है कि तमाम नज़रियाती इख़्तिलाफ़ात के बावजूद इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि मुस्लिम दुनिया की मालूम तारीख़ में किसी दीनी रहनुमा का इतना बड़ा जनाज़ा देखा गया, ना पढ़ा सुना गया।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की चंद ख़ूबियां ऐसी हैं जो आपको दूसरों से बहुत मुमताज करती हैं:

(1) आप अपने असलाफ़े किराम के इल्मी, अ़मली और वफ़ादार वारिस थे।

(2) पूरी दुनिया में आपने अपनी इल्मी शख़्सियत की धाक बिठाई और अ़रब व अ़जम से अपने इल्म का लोहा मनवाया।

(3) दीनी मामलात में आपने कभी कोई समझौता नहीं किया और ना इस सिलसिले में कभी अपने मिज़ाज में कोई लौच आने दी।

(4) पूरी दुनिया में फैले आपके लाखों मुरीदों की आपने समाजी इस्लाह की जो बहुत बड़ा रिफॉर्मर ही कर सकता है। यह इंक़लाबी काम हर तबक़े की तरफ़ से शुक्रिया का हक़दार है क्योंकि इतने लाखों लोगों से आसानी के साथ अपनी बातें मनवा लेना, कई बार हुकूमतों के बस का सौदा भी नहीं होता।

(5) आपने अपनी हज़ार मसरूफ़ियतों के बावजूद इल्मी कामों में कोई रुकावट पेश नहीं आने दी और तहरीरी और इल्मी कामों का सिलसिला बराबर जारी रखा।

(6) आपने शरई मसाइल पर अ़मल पैरा होने वालों को एक बड़ा तोहफ़ा यह दिया कि हर साल एक फ़िक़्ही सेमिनार मुनअ़क़िद करवाया करते थे जिससे दर्जनों जदीद मसाइल का हल निकला। बेशक यह उम्मत के लिए आप की तरफ से एक हसीन तोहफ़ा है।

(7) जामिअ़तुर्रज़ा के नाम से आपने क़ौम को एक निहायत क़ीमती इदारा दिया, जिसमें कई सौ तलबा ज़ेरे तालीम हैं और आला हजरत इमाम अहमद रज़ा ख़ान मुहद्दिसे बरेलवी अ़लैहिर्रहमा का इल्मी फ़ैज़ान हासिल कर रहे हैं।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की बा कमाल ज़िंदगी के हालात इस बात पर दलालत करते हैं और आपके एहसानात का भी तक़ाज़ा यही है कि आपके मानने वाले रियासती और मर्कज़ी हुकूमतों से मुतालबा करें और आपके नामे नामी से मंसूब पूरे मुल्क में तालीमी और सामाजिक इदारे बनवाऐं ताकि ता क़यामत आपका नाम और काम ज़िंदा रहे।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का नाम बीच में आ जाने के बाद इस तरह के काम करना कराना कुछ ज़्यादा मुश्किल भी नहीं क्योंकि सैकड़ों ख़ुलफ़ा के साथ आपके लाखों मुरीद भी दुनिया के गोशे-गोशे में फ़ैले हुए हैं और इन ख़ुलफ़ा में से हर एक की अपनी एक दुनिया है।

रोना यह है कि हमारी हर इल्मी और फ़िक्री शख़्सियत एक खूबसूरत गुंबद और चमकते दमकते मज़ार में गुम हो कर रह जाती है और उसके इल्मी कारनामे उस तरह सामने नहीं आते, जिस तरह आने चाहिए। यह वह सुलूक है जो इस उम्मत का देरीना वतीरा रहा है अल्लाह करे हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की शख़्सियत के साथ हमारा सुलूक कुछ अलग हो।

विसाल के बाद ही से अख़बारों में आप के तअ़ल्लुक़ से मजामीन छपने लगे, जनाजे की ख़बरें छपीं, ताज़ीयत नामे छपे, सोशल मीडिया पर पल-पल हर चीज़ अपडेट रही और इस अंदाज़ से आपका ज़िक्र जमील हुआ कि ग़ैर भी यह महसूस करने पर मजबूर हो गए: हिंदुस्तान का रूहानी लीडर चला गया। इसमें कोई शक नहीं कि जाने को हज़ारों लोग दुनिया से जाते हैं और हर-हर सेकंड में तीन-तीन बच्चे पैदा भी होते हैं लेकिन किसी जाने वाले का इस क़द्र रंज होगा, किसी ने नोट नहीं किया था।

अख़बारों के बाद रिसालों और माहनामों ने आपके मुतअ़ल्लिक़ स्पेशल शुमारे और नम्बर निकालने के एलानात किए। उन्हीं में से एक माहनामा एहसास भी है और इस तरह यह ख़ुसूसी शुमारा हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की बारगाह में एक अदना ख़िराजे अ़क़ीदत है।

हमारे रिसाले की मजबूरी है कि हम आपके बारे में सिर्फ़ तआ़रुफ़ी अंदाज़ के चंद मज़ामीन ले पाए हैं, बहुत ज़्यादा गहरे और इल्मी मज़ामीन नहीं ले पाए और ना लेना हमारी मजबूरी है क्योंकि हमें अपनी रीडरशिप का हाल को मालूम है।

हम शुक्रगुज़ार हैं मौलाना मोहम्मद इमरान बरकाती के जो इस ख़ुसूसी शुमारे के मुहर्रिक बने और साथ ही ममनून हैं हज़रत मौलाना मोहम्मद हनीफ़ ख़ान रज़वी शेरानी के जिनकी हिमायत के बिना इस रिसाले का चल पाना मुमकिन नहीं। अल्लाह तआ़ला सबको अपनी करीमी के मुताबिक़ बेहतरीन सिला अ़ता फ़रमाए।

ताजुश्शरीआ़ की अ़रब में मक़बूलियत

पेशकश: मौलाना इमरान बरकाती,
शेरानी आबाद

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा से जैसे हिन्द व पाक समेत पूरा अ़जम मोहब्बत करता था, उलमा ए अ़रब भी आपसे बे-पनाह अ़क़ीदत रखते थे। लेकिन आप सिर्फ़ उन्हीं अ़रब उलमा के राबते में थे जिन का तअ़ल्लुक़ अहले सुन्नत व जमाअ़त से है।

ऐसे उलमा की एक बड़ी तादाद है जो आपसे बे-पनाह मुतअस्सिर हैं, कुछ वो लोग हैं जो आपसे सिलसिला ए तलम्मुज़ यानी शार्गिदी का रिश्ता भी क़ाइम रखते हैं, कुछ वो हैं जो सिलसिल ए क़ादरिया, बरकातिया, रज़विया में दाख़िल हैं और लग-भग सभी वो हैं जो आपसे इज़ाज़त व ख़िलाफ़त के तालिब भी हैं। यहाँ कुछ ऐसे विदेशी उलमा ए किराम के नाम पेश किए जा रहे हैं जो इन्हीं कामों में से किसी काम के लिए बरेली शरीफ़ भी आ चुके हैं:

(1) हज़रत अ़ल्लामा सय्यद अ़लवी मालिकी, जो मुहद्दिसे मक्का मुकर्रमा के अ़ज़ीम मंसब पर फ़ाइज़ थे।

(2) हज़रत अ़ल्लामा शैख़ उमर बिन सलीम जो बग़दाद शरीफ़ के मोहल्ला अअजमिया की इमामे आ़ज़म मस्जिद के खतीब व इमाम हैं।

(3) हज़रत अ़ल्लामा शैख़ जमील फ़िलिस्तीनी, जो फ़िलिस्तीन में सिलसिला ए नक़्शबन्दिया के शैख़ हैं।

(4) हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुल जलील अल अ़ता, जो दिमश्क़, शाम के अ़ज़ीम मुहद्दिस और आ़लिमे दीन हैं।

(5) हज़रत अ़ल्लामा शैख़ ताहा हबीशी जो जामिआ़ अज़हर, मिस्र में क़िस्मुल फ़लसफ़ा वल अ़क़ीदा के उस्ताज़ और अ़ज़ीम आ़लिमे दीन हैं।

(6) हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल फ़त्ताह अल बज़्म, जो दिमश्क़, शाम के मुफ़्ती ए आ़ज़म हैं।

(7) हज़रत अ़ल्लामा सय्यद मुहम्मद फ़ाज़िल जीलानी, जो इस्तम्बोल, तुर्की के मरकज़ुल जीलानी लिल-बुहूसिल इल्मिया के ज़िम्मेदार हैं।

(8) हज़रत अ़ल्लामा सय्यद मुहम्मद हाशिम मुहम्मद अ़ली हुसैन मेहदी, जो मक्का मुकर्रमा के अ़ज़ीम आ़लिमे दीन हैं।

(9) हज़रत अ़ल्लामा शैख़ मुहम्मद तरशान, उस्ताज़े हदीस व फ़िक़्ह, दिमश्क़, शाम

(10) हज़रत अ़ल्लामा अलाउल हाइक, उस्ताज़े हदीस व फ़िक़्ह, दिमश्क़, शाम

(11) हज़रत अ़ल्लामा शैख़ वाइल अल बज़्म, उस्ताज़े हदीस व फ़िक़्ह, दिमश्क़, शाम

(12) हज़रत अ़ल्लामा शैख़ जमाल फ़ारुक़ दक़्क़ाक़, उस्ताज़े कुल्लियातुद्दावतिल इस्लामिया, जामिआ़ अज़हर, मिस्र

(13) हज़रत अ़ल्लामा शैख़ उसामा सय्यउ महमूदुल अज़हरी, उस्ताज़: कुल्लियातुद्दावतिल इस्लामिया, जामिआ़ अज़हर मिस्र

ख़ास बात यह भी है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने जामिआ़ अज़हर, मिस्र में बुख़ारी शरीफ़ का दर्स दिया, जिसमें 50 मुल्कों के तलबा शरीके दर्स थे। कई एक दरगाहों के मशाइख़ (बुज़ुर्गों) से भी मुलाक़ातें हुईं। इसी तरह

मदीना मुनव्वरा, मक्का मुकर्रमा और दिमश्क़ में भी आपने दर्से बुख़ारी दिया जिसमें सैकड़ों की तादाद में अ़रब शरीक हुए। मुत्तहिदा अ़रब के बे शुमार उलमा व मशाइख़ आपसे शर्फ़े तलम्मुज़ हासिल कर चुके हैं। बहुतों को आपने सनदे हदीस भी इनायत फ़रमाई और बाज़ को इजाज़त व ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा।

अ़रब उलमा आ़ला हज़रत से बड़ी अ़क़ीदत रखते हैं और इसी निस्बत से वो हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के मुतअ़ल्लिक़ भी अच्छा तअस्सुर रखते हैं। उनकी अ़क़ीदतों का एक सुबूत आपके विसाल के बाद के अ़रबी ताज़ियत नामे भी हैं जो आपसे पहले किसी हिन्दी के लिए शायद नहीं पेश किए गए।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की ख़िदमात और चहारदांगे आ़लम में आपकी शोहरत व मक़बूलियत देख कर हुज़ूर आ़ला हज़रत अ़लैहिर्रहमा की उस बशारत की याद ताज़ा हो जाती है जो आपने बीसलपुर में हज़रत मुफ़स्सिरे आ़ज़म की तरफ़ इशारा करते हुए दी थी।

एक मर्तबा आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अ़लैहिर्रहमा अपने चहीते ख़लीफ़ा और रुहानी साहबज़ादा हज़रत मौलाना इरफ़ान अ़ली साहब के दौलत कदे पर तशरीफ़ ले गए, साथ में आपके पोते हज़रत मुफ़स्सिरे आ़ज़म भी थे, उस वक़्त आपकी उम्र 10 या 12 साल होगी, वहाँ आ़ला हज़रत ने मुफ़स्सिरे आ़ज़म की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमायाः इससे मेरी औलाद में एक साहबज़ादा होगा जो इस्लाम की बड़ी ख़िदमत करेगा और मेरा नाम रोशन करेगा।

हज़रत मौलाना इरफ़ान अ़ली साहब के साहबज़ादे जनाब मुहम्मद मअ़वान अ़ली साहब और उनके पोते इस बात के रावी हैं।

मुफ़्ती ए आज़म का ज़र्रा क्या बना अख़तर रज़ा।
महफ़िले अंजुम में अख़तर दूसरा मिलता नहीं

ग़ुस्ले काबा का शरफ़ः- ज़िलहिज्जा के महीने में हर साल एक बार काबा शरीफ़ का ग़िलाफ़ बदला जाता है। इसी तरह साल के मख़सूस दिनों में ताला खोला जाता है और काबा शरीफ़ के अंदरुनी हिस्से को धोया जाता है, जिसे ग़ुस्ले काबा कहते हैं। इन्हीं मख़सूस दिनों में से 1 शाबान है, जिसमें ताला खोला जाता है और अंदरुनी हिस्से को ग़ुस्ल दिया जाता है। फिर मख़सूस हज़रात जिन्हें बादशाह या कलीद बरदार की तरफ़ से इजाज़त होती है, वो हज़रात अंदर जाकर नमाज़ें अदा करते हैं, दुआएं करते हैं और अपना दामने गौहर मुराद से भरते हैं।

ग़ुस्ले काबा का मंज़र इतना हसीन और पुर कैफ़ होता है, जिसका बयान करना या लिखना मुमकिन नहीं बस इतना समझ लेना चाहिए कि वह मुशाहदा (देखने) से तअ़ल्लुक़ रखता है। ऐसी नूरानी कैफ़ियत कि हर तरफ़ से अल्लाहु अकबर की सदाऐं बलंद होती रहती हैं और कहीं से तस्बीह व तहलील की आवाज़ें, कहीं से सिस्कियों और आहों की गूंजें सुनाई देती हैं। पूरा मताफ़ और मस्जिदे हराम खचा-खच भरी होती है। 1, शाबान को फ़ज्र के बाद हिफ़ाज़ती दस्ता तअ़य्युन हो जाता है जो काबा को अपने घेरे में कर लेता है। फिर कलीद बरदार दरवाज़ा खोलने के लिए आते हैं।

चूँकि काबा की चौखट ज़मीन से तक़रीबन नौ फ़िट की उंचाई पर है, इस लिए एक रिमोट सिस्टम की सीढ़ी जो मताफ़ में रखी रहती है, लाकर फ़िट कर दी जाती है, उसके बाद काबा का दरवाज़ा खोला जाता है और ग़ुस्ल दिया जाता है। ग़ुस्ल देने वाले हज़रात ग़ुसाला महफ़ूज़ कर लेते हैं, पूछने पर मालूम हुआ कि उसे बरकत के तौर पर इस्तिमाल करते हैं। इस मौक़े पर हैरत का मक़ाम यह है कि वहाबी यहाँ शिर्क का हुक्म लगाना भूल जाते हैं।

गु़स्ल के बाद बादशाह अपने चंद वज़ीरों के साथ काबा शरीफ़ के अंदर दाखि़ल होता है और निकल कर तवाफ़ करता है। फिर दूसरे हज़रात जाते हैं। सिक्यूरिटी का सख़्त इंतिज़ाम होता है। आ़म आदमी पर नहीं मार सकता। बादशाह की तरफ़ से और कलीद बरदारों की तरफ़ से जिन-जिन मोअ़ज़्ज़ लोगों को इजाज़त मिली होती है, वो हज़रात बादशाह के चले जाने के बाद काबा के अंदर जाते हैं।

कलीद बरदार सहाबी ए रसूल की नस्ल से हैं, उनकी तरफ़ से हज़रत ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा और आपके शहज़ाद ए वाला तबार हज़रत मौलाना अ़सजद रज़ा को दावत मिली और आप इस मुबारक काम के लिए तशरीफ़ ले गए। मौजूदा कलीद बरदार के वालिदे माजिद जिन का कुछ साल पहले इंतिक़ाल हुआ, से मक्का मोअ़ज़्ज़मा के बहुत सारे ख़ुश अक़ीदा उलमा बिल ख़ुसूस अ़ल्लामा सय्यद अ़लवी मालिकी मुहद्दिस मक्का मुकर्रमा वग़ैरह के अच्छे राबते थे और हैं बल्कि बहुत से उलमा ए अ़रब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से इरादत (मुरीद) व खि़लाफत और सनदे हदीस की इजाज़त रखते हैं।

जब उलमा ए मक्का ने हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की इल्मी व अदबी खि़दमात का तआ़रुफ कराया तो मौजूदा कलीद बरदार के वालिदे माजिद ने चाहा कि मैं मुजद्दिदे आ़ज़म मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा अ़लैहिर्रहमा के नबीरा ताजुश्शरीआ़ शैख़ुल हिन्द हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी साहब को अंदरुने काबा दाखि़ले की दावत दूं। हुज़ूर के एक मुरीदे ख़ास जनाब फ़ारुक़ सौदागर साहब हैं, जिन के तअ़ल्लुक़ात मौजूदा कलीद बरदार से हैं, उन्होंने उनके सामने यह बात रखी और अ़र्ज़ किया कि इस साल शाबानुल मोअ़ज़्ज़म 1434 हिज्री में जब गु़स्ले काबा हो तो उस में मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती शैख़ मुहम्मद अख़्तर रज़ा अ़लैहिर्रहमा और उनके साहबज़ादे को काबा के अंदर दाखि़ल होने के लिए मदऊ कर दें, जिसे उन्होंने बड़ी फ़राख़ दिली से क़ुबूल करते हुए दावत दी।

यहाँ इस ग़लत फ़हमी का इज़ाला ज़रूरी है जो कुछ हासिदों ने सोशल मीडिया के ज़रीआ़ फै़लाई कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने वहाबी हुकूमत की दावत क़ुबूल की और यह जाइज नहीं। इस ऐतिराज़ के दो जवाब हैं: (1) जैसा कि ऊपर तफ़सील से गुज़रा हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने वहाबी हुकूमत की नहीं बल्कि काबा शरीफ़ के कलीद बरदार सहाबी ज़ादों की दावत पर गु़स्ले काबा में शिरकत की, जिसकी गवाही अब भी फ़ारूक़ भाई वग़ैरह से हासिल की जा सकती है लिहाज़ा यह सफै़द झूट है कि आपने वहाबी हुकूमत की दावत क़ुबूल की।

(2) अगर वहाबी हुकूमत की दावत पर भी गु़स्ले काबा में शिरकत होती तो यह शरई नुक़्त ए नज़र से ना जाइज़ ना होती क्योंकि काबा शरीफ़ वहाबी या किसी भी हुकूमत की मिल्कियत नहीं बल्कि हुकूमतें सिर्फ़ इंतिज़ामी उमूर की देख-रेख करती हैं, काबा शरीफ़ अल्लाह तआ़ला का पाकीज़ा घर है, जिसमें सब का हक़ है और अगर गु़स्ले काबा में शिरकत के लिए वहाबी हुकूमत दावत पेश करे तो उस दावत को वैसे ही क़ुबूल करना जाइज़ है जैसे वहाबी हुकूमत के दौरे इक़्तिदार में हज करना जाइज़ है।

शहज़ाद ए ताजुश्शरीआ़ हज़रत मौलाना अ़सजद रज़ा साहब बयान करते हैं कि जब हम काबा शरीफ़ में दाखि़ले के लिए सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे तो सैकड़ों लोगों ने वालिदे माजिद की पेशानी चूमते हुए दुआ़ओं की गुज़ारिश की और करम यह हुआ कि जब हम अंदर पहुँचे तो इधर-उधर निगाहें जमाईं मगर निगाहें झुक गईं, नमाज़ें अदा कीं और दुआ़एं मांगी और अंदर जो हज़रात थे वो सब अब्बा हुज़ूर की शेष पृष्ठ 21 पर

ताजुश्शरीआ़ का अजीम़ ख़ानदान

–मौलाना अब्दुर्रहीम खान कादरी बस्तवी
जामा मस्जिद, दमुआ, छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश)

हिन्दुस्तान की अ़ज़ीम तरीन शख़्सियत हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी का ख़ानदानी नसब यह है:

ताजुश्शरीआ़ का नसब नामाः– (1) मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा खान क़ादरी अज़हरी बिन (2) मुहम्मद इब्राहीम रज़ा खान क़ादरी जीलानी बिन (3) मुहम्मद हामिद रज़ा खान क़ादरी रज़वी बिन (4) इमाम अहमद रज़ा खान क़ादरी बरकाती बिन (5) अ़ल्लामा नक़ी अ़ली खान बिन (6) मौलाना रज़ा अ़ली बिन (7) हाफिज़ काज़िम अ़ली खान बिन (8) हज़रत मुहम्मद आ़ज़म खान बिन (9) मुहम्मद सआ़दत यार खान बिन (10) सईदुल्लाह खान रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन।

इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान मारूफ़आ़ला हज़रत अ़लैहिर्रहमा की छट्टी पीढ़ी में हज़रत सईदुल्लाह ख़ान हुए हैं जो हिन्दुस्तानी जंग के बड़े शहसवार थे। आपको जंग में बड़ी महारत हासिल थी। आप ख़ानदाने मुग़्लिया के बादशाह मुहम्मद शाह (जो अपनी अ़य्याशियों की वजह से मुहम्मद शाह रंगीला कहलाता था) के दौर में मुल्के हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली पर सन 1739 में "नादिर शाह दुर्रानी" ने हमला किया और उसके बाद क़त्ले आ़म किया। यह तारीख़े हिन्द की बहुत दर्द नाक दास्तान है।

उसी नादिर शाही क़ाफिले में मुल्क अफ़ग़ानिस्तान के शहर क़न्धार के मशहूर क़बीला बड़हेच के एक पठान, एक मर्दे ज़ीशान, अ़ज़ीम जर्नल हज़रत सईदुल्लाह ख़ान भी शामिल थे। आप शहर लाहौर में आए और दिल्ली के बादशाह ने उनकी जवां मर्दी और ख़ानदानी बहादुरी को देखते हुए हाथों हाथ लिया। जब आप दिल्ली आए तो बादशाह ने आपको छः हज़ार फ़ौजियों का कमांडर मुक़र्रर कर के सियादत के मंसब पर फाइज़ किया और आपकी फ़ौजी सलाहिय्यतों के मद्दे नज़र आपको शुजाअ़त जंग के ख़िताब से नवाज़ा गया।

हज़रत सआ़दत यार ख़ानः– आप हज़रत सईदुल्लाह खां साहब रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के साहबज़ादे थे और एक बड़े उहदे पर फ़ाइज़ थे।

हुकूमत की तरफ़ से एक मुहिम सर करने के लिए बरेली रोहेल खंड भेजे गए, कामयाब होने के बाद आपको बरेली का सूबेदार बनाने के लिए शाही फ़रमान आया लेकिन यह फ़रमान उस वक़्त आया जब अपनी ज़िंदगी की आख़री सांसें ले रहे थे।

हज़रत मुहम्मद आ़ज़म ख़ानः– आपको भी दरबार में बा इज़्ज़त मक़ाम और वज़ारत का मंसब हासिल था लेकिन कुछ अ़र्से बाद आपका दिल दुनयावी कर्रो फ़र से उचाट हो गया और आपने सब कुछ छोड़ कर के दुर्वेशी और फ़क़ीरी इख़्तियार कर ली। आपका विसाल बरेली ही में हुआ मुहल्ला बिहारीपूर में अ़मारान के क़ब्रिस्तान में आप आराम फ़रमा हैं। उस क़ब्रिस्तान को आप ही की वजह से शहज़ादे का तकिया कहा जाता है।

हाफ़िज़ काज़िम अ़ली ख़ानः– आप हज़रत मुहम्मद आ़ज़म खॉ के बड़े साहबज़ादे और जानशीन हैं। आप शहर बदायूं के हाकिम थे। दो सौ सवारों की बटालियन आपके मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल थी। आपको हज़रत

मौलाना अनवारुल हक़ साहब फ़िरंगी महल्ली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि से बैअ़त व ख़िलाफत हासिल थी। हज़रत मौलाना अनवारुल हक़ साहब फिरंगी महल्ली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि हजूर आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के मुर्शिदे तरीक़त हज़रत सय्यद आले रसूल अहमदी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के उस्ताज़ थे।

हज़रत मौलाना रज़ा अ़ली खानः- क़ुदवतुल वासिलीन, इमामुल उलमा, हज़रत मौलाना रज़ा अ़ली खान रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि हज़रत हाफिज़ काज़िम अ़ली खॉ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के फ़र्ज़ंदे अर्जमंद हैं, आपकी विलादत सन 1809 ईस्वी में बरेली में हुई, आप इस ख़ानदान के पहले शख़्स हैं जो इल्मे दीन की दौलत से मालामाल हुए और ख़ानदान में मुफ़्तियों का चिराग़ रोशन हुआ तो होता ही रहा।

आप ही से हाकिमिय्यत और शम्सीर व सनान के बजाए क़लम व किताब का दौर शुरु हुआ और आप गुमराह फ़िर्क़ों पर शेरे ख़ुदा और सैफुल्लाह की शमसीर बन कर बिजली की तरह चमके। 22 साल की उम्र में आपने ख़लीलुर्रहमान टोंकी राजस्थानी से जुम्ला उलूम व फुनून की तकमील की और पूरी दुनिया में शोहरत पाई। आप इल्म की तरह बा कमाल वली ए कामिल थे।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली खानः- ताजुल औलिया, रईसुल फुज़ला, हामि ए सुन्नत, माहि ए बिदअ़त, बक़िय्यतुस्सलफ़, हुज्जतुल ख़लफ़ हज़रत अ़ल्लामा नक़ी अ़ली ख़ान रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि रजब 1222 हिज्री में पैदा हुए। आपने अपने वालिद माजिद हज़रत आ़रिफ़ बिल्लाह साहिबे कमालात व करामात हज़रत मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान साहब से इक्तिसाबे उ़लूम फ़रमाया।

बिहम्दिही तआला आपका मनसब शरीफ़ का पाया बलंद था जिसका फ़ाइदा मख़लूक़ के लिए यह हुआ कि आपने अपने बाज़ूओं की हिम्मत और ताक़त से इस शहर को मुख़ालिफ़ों के फ़ितनों से बिलकुल पाक कर दिया।

अ़ल्लामा नक़ी अ़ली ख़ान अ़लैहिर्रहमा ने 5 जुमादल उख़रा 1295 हिज्री को मारहरा मुतहहरा में सय्यिदुल वासिलीन, सनदुल कामिलीन सय्यिदुना आले रसूल अहमदी के मुबारक हाथों पर शर्फ़े बैअ़त हासिल की।

29 शव्वाल 1295 हिज्री को सख़्त बीमार होने के बावजूद ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़री देने गए और वहाँ हज़रत सय्यद अहमद ज़ैन देहलान शैख़ुल हरम वग़ैरह उलमा ए मक्का मुअ़ज़्ज़मा से मुक़र्रर सनदे हदीस हासिल फ़रमाई।

ज़ी-क़अ़दा बरोज़ जुमेरात वक़्ते ज़ुहर 1297 हिज्री को 51 बरस 5 महीने की उम्र में ख़ूनी इस्हाल के मर्ज़ में शहादत पाकर जुमा की रात अपने वालिदे माजिद के किनारे में जगह पाई।

आपकी शादी अस्फ़ंद यार बेग की बड़ी साहबज़ादी हुसैनी ख़ानम से हुई। आपकी छः औलाद हुईः (1) मौलाना अहमद रज़ा ख़ान (2) मौलाना हसन रज़ा ख़ान (3) मौलाना मुहम्मद रज़ा ख़ान (4) हिजाब बेगम (5) अहमदी बेगम (6) मुहम्मदी बेगम।

आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ानः- हुजूर ताजुश्शरीआ के पर दादा और पर नाना आ़ला हज़रत, मुजद्दिदे आ़ज़म, शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, इमाम अहमद रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती अ़लैहिर्रहमा हैं जो 100 से ज़ाइद उलूम व फुनून के जामे और माहिर थे। लगभग एक हज़ार किताबें लिखीं और सच्चे आ़शिक़े रसूल, मोहसिने सुन्नियत, अ़लम बरदारे सुनिनयत हैं। आ़ला हज़रत की तारीफ़ व तौसीफ़ और कारनामों का ज़िक्र करने के लिए एक दफ़तर दरकार है।

आ़ला हज़रत की शादी 1291 हिज्री में अफ़ज़ल हुसैन साहब की बड़ी साहबज़ादी ''इरशाद बेगम'' से

हुई। शैख़ साहब मौसूफ़ उस्मानी थे।

आ़ला हज़रत के दो साहबज़ादे आर पांच साहब ज़ादियां हैं। (1) हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ान (2) मुफ़्ती ए आज़म अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान।

हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ान ताजुश्शरीआ़ के पर दादा और मुफ़्ती ए आज़म अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान आपके नाना हैं।

आ़ला हज़रत अ़लैहिर्रहमा की साहबज़ादियों के नाम ये हैं: (1) मुस्तफ़ाई बेगम, इन की शादी आ़ला हज़रत के भांजे जनाब हाजी शाहिद अ़ली ख़ान साहब से हुई, जिनकी सिर्फ़ एक लड़की हुई अ़ज़ूबी बी, जो मौलवी सरदार ख़ान साहब से मनसूब हुईं। यह साहबज़ादी आ़ला हज़रत की हयात में फ़ौत हो गईं।

(2) कनीज़ हसन, जिन को मंझली बेगम कहते हैं, इन की शादी जनाब हमीदुल्लाह ख़ान साहब वल्द हाजी अहमदुल्लाह ख़ान साहब रईसे शहर पुराना बरेली से हुई। इन की दो औलाद हुईं। अ़तीकुल्लाह ख़ान साहब और एक साहबज़ादी रिफ़अ़त जहाँ बेगम।

(3) कनीज़ हुसैन, जिन को संझली बेगम कहते हैं इन की शादी जनाब हकीम हुसैन रज़ा साहब इब्ने मौलाना हसन रज़ा साहब से हुईं, इनके तीन लड़के हुए: (1) मुर्तज़ा रज़ा खॉ (2) मौलवी इदरीस रज़ा ख़ान साहब (3) जरजीस ख़ान साहब, इमाम अहले सुन्नत के विसाल के 21 दिन बाद इनका विसाल हो गया।

(4) कनीज़ हसनैन उर्फ़ छोटी बेगम, इन की शादी मौलाना हसनैन रज़ा इब्न उस्ताज़े ज़मन अ़ल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ से हुई, इन की सिर्फ़ एक लड़की हुई जो जरजीस मियां को मंसूब हुई।

(5) मुर्तज़ाई बेगम उर्फ़ छोटी बन्नो, इन की शादी जनाब हाजी अहमदुल्लाह ख़ान साहब रईसे शहर पुराना शहर बरेली के साहबज़ादे मजीदुल्लाह खॉ साहब से हुई। इन के तीन लड़के हुए और दो लड़कियां हुईं: (1) रईस मियां (2) रईस मियां (3) फ़रीद मियां (4) मुज्तबाई बेगम (5) मुक़्तदाई बेगम है।

अ़ल्लामा मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ानः- ताजुश्शरीआ़ के दादा हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अ़ल्लामा हामिद रज़ा ख़ान की माहे रबीउल अव्वल 1292 हिज्री मुताबिक़ 1875 में पैदाइश हुई। आप आ़ला हज़रत के जानशीन, दरजनों किताबों के मुसन्निफ़ और सैकड़ों के शैख़ व उस्ताज़ हैं। आपको ज़बान पर बड़ा उबूर हासिल था। बिल-खुसूस अ़र्बी अदब में बड़ी महारत थी। आपका नमाज़े इशा के दौरान आ़लमे तशहहुद में 17 जुमादल उला 1362 हिज्री मुताबिक़ 23 मई 1943 इस्वी में इन्तिक़ाल हुआ।

हज़ूर हुज्जतल इस्लाम की शादी आपकी फ़ूफ़ी ज़ाद बहन कनीज़ आ़इशा हम्शीरह जनाब हाजी शाहिद अ़ली खान साहब के साथ हुई। आप अ़लैहिर्रहमा के दो साहबज़ादे और चार साहबज़ादियां थीं। (1) साहबज़ादों के नाम ये हैं: हज़रत मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ान जीलानी मियां, जो हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के वालिद हैं।

(2) हज़रत मौलाना हम्माद रज़ा ख़ान नोमानी मियां, जो हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के चचा हैं। चारों लड़कियों के नाम ये हैं: (1) उम्मे कुलसूम ज़ौजा हकीम हुसैन रज़ा खान, (2) कनीज़ सुग़रा ज़ौजा तक़दुस अ़ली खां (3) राबिआ़ उर्फ नूरी, ज़ौजा मशहूद अ़ली ख़ान साहब (4) सलमा बेगम ज़ौजा मुशाहिद अ़ली ख़ान।

मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ानः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के नाना हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान की पैदाइश 1310 हिज्री मुताबिक़ 7 जूलाई 1893 ईस्वी में हुई। आप आ़ला हज़रत के छोटे शहज़ादे और जानशीन हैं। लाखों के पीरे तरीक़त सैकड़ों उलमा व मशाइख़ के शैख़, रहनुमा और दरजनों किताबों के मुसन्निफ़ हैं। फ़तवे लिखना आपका

ख़ास काम था।

14 मुहर्रमुल हराम 1402 हिज्री मुताबिक़ 13 नवम्बर 1981 इस्वी में मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द का कलिमा ए तय्यिबा पढ़ते हुए विसाल हुआ। आपकी नमाज़े जनाज़ा में इतनी भीड़ थी कि शुमार मुमकिन नहीं था। अख़बारी रिपोर्ट के मुताबिक़ ग़ैर मुंक़सिम हिन्द के किसी भी जनाजे में इतनी भीड़ ना देखी गई, जितनी आपके जनाजे में थी लेकिन हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा के जनाज़े ने यह रिकार्ड भी तोड़ दिया।

मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द की शादी आपके छोटे चचा मौलाना मुहम्मद रज़ा ख़ान साहब (जो आ़ला हज़रत के छोटे भाई हैं) की इकलौती साहबज़ादी से हुई। आपकी दस साहबज़ादियां है और एक साहबज़ादा थे, साहबज़ादे बचपन में फ़ौत हो गए थे।

हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ानः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा के वालिदे मोहतरम मुफ़स्सिरे आ़ज़मे हिन्द हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ान बड़े आ़लिम, बेहतरीन मुफ़स्सिर, अच्छे ख़तीब, शानदार क़लमकार और लाजवाब मुसन्निफ़ हैं।

सन 1325 हिज्री मुताबिक़ 1902 में पैदा हुए। आपकी पैदाइश की ख़ुशी में शानदार अ़क़ीक़ा हुआ और बेहतरीन तालीम व तर्बियत 1344 हिज्री मुताबिक़ 1925 ईस्वी में दारूल उलूम मंज़रे इस्लाम से फ़ारिग़ हुए। उसी दिन हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अ़ल्लामा हामिद रज़ा खां रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने नियाबत व ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई।

हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द हज़रत अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खां की बड़ी साहब ज़ादी से सरकारे आ़ला हज़रत ने अपने शाहज़ादगान की इजाज़त से निकाह फ़रमाया। पूरी ज़िंदगी मस्लके आ़ला हज़रत की इशाअ़त में गुज़ारी। मंज़रे इस्लाम में दर्स देते रहे। तबलीग़ी दौरे फ़रमाते, किताबें लिखते, आप माहनामा आ़ला हज़रत के एडीटर भी रहे। 5 शहज़ादे और 3 साहबज़ादियां बतौर यादगार छोड़ीं। 11 सफ़र 1385 हिज्री मुताबिक़ 12 जून 1965 ईस्वी बरोज़ शम्बा 60 साल की उम्र में इन्तेक़ाल फ़रमा गए। नमाज़े जनाज़ा बहरुल उलूम अ़ल्लामा सय्यद मुफ़्ती मुहम्मद अफ़ज़ल हुसैन मुंगेरी ने पढ़ाई। आपका मज़ार आ़ला हज़रत के दाएं जानिब है।

ताजुश्शरीआ़ के भाई-बहनः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के पांच भाई हैं और तीन बहनें हैं। सबसे बड़े भाई हैं: (1) रेहाने मिल्लत मौलाना रेहान रज़ा ख़ां क़ादरी रहमानी मियां, इनकी पैदाईश 18 ज़िल हिज्जा सन 1353 हिज्री सन 1934 इस्वी में हुई और विसाल 18 रमज़ानुल मुबारक सन 1405 हिज्री सन 1985 ईस्वी में हुआ।

(2) तनवीर रज़ा क़ादरी, आप बचपन से जज़्ब की कैफ़ियत में ग़र्क़ रहते थे और आख़िर कार मफ़क़ूदुल ख़बर (गुम) हो गए।

(3) तीसरे आप ख़ुद हैं, हज़रत अ़ल्लाम मुफ़्ती अख़तर रज़ा ख़ान आपका ही लक़ब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ है।

और दो भाई हैं: (4) डॉक्टर क़मर रज़ा ख़ां क़ादरी और (5) मौलाना मन्नान रज़ा ख़ां क़ादरी मन्नानी मियां।

(1) बड़ी बहन पीली भीत में जनाब शौकत अ़ली ख़ान से बियाही गई। (2) दूसरी बहन बदायूं में शैख़ अ़ब्दुल हसीब के निकाह में आईं। बिहम्दिही तआ़ला इन दोनों साहबज़ादियों से लड़के और लड़कियां मौजूद हैं। (3) तीसरी बहन का निकाह, ख़ानदान ही में ही जनाब यूनुस रज़ा ख़ान साहब से हुआ जिनकी कोई औलाद नहीं।

☆ ☆ ☆

ताजुश्शरीआ़ की पाक जिंदगी

-मौलाना मोहम्मद हनीफ खान
सरबराहे आलाः सुन्नी तबलीग़ी जमाअ़त, शेरानी आबाद

नामः- ताजुश्शरीआ़, हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी दामा ज़िल्लुहू का पूरा नाम मुहम्मद इस्माईल रज़ा'' और उर्फ़ियत ''अख़्तर रज़ा'' है। शाइरी में आप ''अख़्तर'' तख़ल्लुस इस्तेमाल फ़रमाते हैं। आपके अलक़ाब में ताजुश्शरीआ़, जा नशीने मुफ़्ती ए आ़ज़म और शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन ज़्यादा मशहूर हैं।

पैदाइशः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ दामत बरकातुहुम की पैदाइश 24 ज़िल क़ादा 1362 हिज़्री मुताबिक़ 23 नवम्बर 1943 ईस्वी बरोज़ मंगल हिन्दुस्तान के शहर बरेली शरीफ़ के मोहल्ला सोदागरान में हुई।

इज़्दिवाजी ज़िन्दगीः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का निकाह हकीमुल इस्लाम मौलाना हसनैन रज़ा ख़ान इब्न मौलाना हसन रज़ा ख़ान बरेलवी साहब की दुख़्तरे नेक अख़्तर और मौलाना तहसीन रज़ा खान और मौलाना सिबतैन रज़ा खान की नेक बहन के साथ 3 नवम्बर 1968 ईस्वी में शाबानुल मुअज़्ज़म 1388 हिज्री कांकर टोला पुराना शहर बरेली शरीफ़ में हुआ।

औलाद अमजादः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के एक साहबज़ादा और पांच साहबज़ादियां हैं: (1) जानशीने ताजुश्शरीआ़ हज़रत मौलाना असजद रज़ा खां, जिनकी पैदाइश 14 शाबान 1390 हिज्री मुताबिक़ 1970 ईस्वी मोहल्ला ख़्वाजा क़ुतुब बरेली में हुई।

हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़म ने आपके मुंह में लुआबे दहन डाल कर सिलसिला ए बरकातिया रज़विया में दाख़िल फ़रमाया आपका पैदाइशी नाम मुहम्मद मुनव्वर रज़ा हामिद और उर्फ़ियत असजद रज़ा है। आपने इब्तिदाई किताबें घर पर मुफ़्ती मुज़फ़्फ़र हुसैन रज़वी और मुफ़्ती नाज़िम अ़ली क़ादरी से पढ़ीं। फिर ज़ामिया नूरिया रज़विया में इल्म हासिल किया।

दर्से निज़ामी की राइज किताबें बुख़ारी शरीफ़ और तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरह हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से पढ़ीं। वालिदे माजिद ने 2002 में सनदे फ़राग़त के साथ ही तमाम सिलसिलों की इज़ाज़त व ख़िलाफ़त, वज़ाइफ और आ़माल व अशग़ाल में मुजाज़ और माज़ून फ़रमाया।

आपको गुले गुलज़ारे बरकातियत हज़रत सय्यद अमीन मियां बरकाती सज्जादा नशींन मारहरा मुतहहरा से भी ख़िलाफ़त व इज़ाज़त हासिल है।

आपकी शादी खाना आबादी पीरे तरीक़त रहबरे शरीअत हज़रत अ़ल्लामा सिबतैन रज़ा साहब की साहबज़ादी मोहतरमा राशिदा नूरी साहिबा से 2 शाबानुल मुअज्ज़म 1411 हिज्री 17 फ़रवरी 1991 बरोज़ इतवार हुई। आपकी चार साहबज़ादियां: (1) अ़रीज़ फ़ातिमा, (2) इम्रह फ़ातिमा (3) मज़ीना फ़ातिमा (4) बुशरा फ़ातमा और दो साहबज़ादे: (5) हुसाम अहमद रज़ा और (6) हम्माम अहमद रज़ा हैं।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की बड़ी साहबज़ादी (1) मोहतरमा आ़सिया बेगम आ़ली जनाब इंजीनियर मुहम्म्द बुरहान रज़ा साहब दिल्ली को मंसूब हैं, जिनसे एक साहबज़ादा मुहम्मद अ़लवान रज़ा और एक साहबज़ादी हैं।

(2) दूसरी साहबज़ादी सअ़दिया बेगम साहिबा हैं जो आ़ली जनाब अलहाज मुहम्मद मन्सूब अ़ली ख़ान (बहेड़ी) को मंसूब हैं। इनसे एक साहबज़ादी और एक साहबज़ादा मुहम्मद मिनहाल रज़ा हैं।

(3) तीसरी साहबज़ादी मोहतरमा क़ुदसिया बेगम

साहिबा हैं हज़रत मौलाना मुहम्मद शुऐब रज़ा नईमी दिल्ली को मंसूब हैं, इनसे एक साहबज़ादे मुहम्मद हमज़ा ख़ुबैब हैं।

(4) साहबज़ादी मोहतरमा अ़तिया बेगम साहिबा हैं, जो हज़रत मौलाना मुहम्मद सलमान रज़ा साहब इब्न अमीने शरीअत को मंसूब हैं दो साहबज़ादे मुहम्मद सुफ़यान रज़ा मुहम्मद शाबा़न रज़ा हैं।

(5) पांचवी साहबज़ादी मोहतरमा सारिया बेगम हैं, आ़ली जनाब मुहम्मद फ़रहान रज़ा को मंसूब हैं जिनसे एक साहब ज़ादी हैं।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के मामूलात:- आप अपने मामूलात के सख़्त पाबंद थे। हम यहाँ आपके रात-दिन के मामूलात के बारे लिख रहे हैं कि किस तरह आप अपना वक़्त कामों में गु़ज़ारते थे। सनीचर के दिन बाद नमाज़े फ़ज्र तिलावते कु़रआन और वज़ाइफ से फ़ारिग़ हो कर नाश्ता करते और फ़िर किताबें सुनते या फ़तावा तहरीर फ़रमाते, या तहरीर करवाते, या फ़तावा सुन कर तस्दीक़ फ़रमाते। दोपहर 1 बजे तक ड्राइंग रुम में तशरीफ़ रखते। तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह के तलबा को 11 या 12 बजे के बाद दर्स देते। खाना तनावुल फ़रमा कर क़ैलूला फ़रमाते। बाद नमाज़े ज़ुहर फिर किताबें सुनते या किताबें लिखवाते। बाद नमाज़े अ़स्र दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ पढ़ते। बाद नमाज़े मग़्रिब वज़ाइफ़ से फारिग़ हो कर फिर किताबें सुनते या किताबें लिखवाते फिर बाद नमाज़े इशा खाना तनावुल फ़रमाते। उसके बाद थोड़ी देर टहलते। फिर किताबें सुनते या लिखवाते और रात 11-12 बजे तक यह सिलसिला जारी रहता। इसी दौरान मुलाक़ाती मुलाक़ात भी करते, मुरीद होने वाले सिलसिले में दाखिल होते।

फ़ज्र से पहले आंख खुल जाती तो तहज्जुद पढ़ते वरना नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाने के बाद ऊपर मज़कूर तफ़सील के मुताबिक़ मामूलात अंजाम देते।

इतवार के दिन बाद नमाज़े इशा इंटरनेट पर ऑन-लाइन सवालों के जवाब देते, इंगलिश का जवाब इंग्लिश में, अ़र्बी का अ़र्बी में और उर्दू का उर्दू में जवाब होता।

जुमेरात को दोपहर में दौर ए हदीस के तलबा को बुख़ारी शरीफ़ का दर्स देते, बाद नमाज़े मग़्रिब अज़हरी गेस्ट हाउस के हाल में अ़वामे अहले सुन्नत के सवालों के जवाब देते।

पास-पड़ोस के अ़लावा दूर-दराज़ से लोग हज़रत की ''महफ़िले सवाल व जवाब'' में हाज़िर होते। बक़िया मामूलात सनीचर के मुताबिक़ होते।

जुमा के दिन देर से ड्राइंग रुम में तशरीफ़ लाते, तक़रीबन 10 या 11 बजे आ जाते। मुलाक़ातियों से मुलाक़ात के बाद तहरीरी काम करवाते। 1 बजे अंदर तशरीफ़ ले जाते। फिर जुमा के वक़्त तय्यार हो कर बाहर आते। खुतबा देते और नमाज़ पढ़ाते। बाद नमाज़े मग़्रिब शहर की किसी मस्जिद में सवाल व जवाब का प्रोग्राम रखा जाता, वहाँ तशरीफ़ ले जाते। फिर तशरीफ़ लाने के बाद बक़िया मामूलात मज़कूर तरीक़े के मुताबिक़ होते।

इसके अ़लावा किसी दिन किसी वक़्त नमाज़े जनाज़ा के लिए या तअ़ज़ियत और अ़यादत के लिए तशरीफ़ ले जाते या आसपास के प्रोग्राम में भी तशरीफ़ ले जाते। सफ़र व हज़र में आ़म तौर पर इन मामूलात में फ़र्क़ नहीं आने देते। अलबत्ता वह वक़्त जो स्टेज या मुलाक़ात में सर्फ़ होता, वह इससे अलग है।

औलिया ए किराम से मुहब्बत:- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अल्लाह वालों से और महबूबाने इलाही से बड़ी अ़क़ीदत व मुहब्बत रखते थे, उनका अदब करते, उनकी बारगाह में हाज़िरियां देते, उनके वसीले से दुआ़एं करते, उनकी रविश को अपनाते, उनका ज़माने भर में ख़ुतबा पढ़ते और उनके दर से वाबस्तगी को दीन व दुनिया के लिए

कामयाबी का ज़रिआ़ समझते।

ऐसा इस लिए कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ख़ुद वली बिन वली बिन वली बिन वली थे, जिन्हें देखने से खुदा याद आता इसी वजह से आपके अंदर औलिया अल्लाह की अ़क़ीदत व मुहब्बत का होना एक फितरी बात है।

आ़म तौर पर आप जिन औलिया ए किराम और मशाइख़े इज़ाम के मज़ारात पर हाज़री देते उनमें बरेली शरीफ़ में सिटी क़ब्रिस्तान में आराम फ़रमा ख़ानवादा ए रज़विया के मशाइख़ शामिल हैं। बिलख़ुसूस इमामुल उलमा मौलाना रज़ा अ़ली, रईसुल मुतकल्लिमीन अ़ल्लामा नक़ी अ़ली, उस्ताज़े ज़मन अ़ल्लामा हसन और दरगाह आ़ला हज़रत, दरगाह शाह दाना वली और दरगाह अ़ल्लामा तहसीन रज़ा ख़ान अ़लैहिमुर्रहमा में हाज़री दिया करते।

बदायूं में छोटे सरकार, बड़े सरकार, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के वालिद माजिद, मारहरा मुतहहरा में बुज़ुरगाने दीन, सादाते किराम कालपी शरीफ़, सदरुश्शरीआ़, हाफिज़े मिल्लत अ़लैहिमुर्रहमा, बिलख़ुसूस ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, मुहद्दिसे देहलवी शेख मुहक़्क़िक़ अ़ब्दुल हक़, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, बुज़ुर्गाने देहली बुज़ुर्गाने मुम्बई, बुज़ुर्गाने अहमदाबाद, सय्यदना रिज़क़ुल्लाह शाह दाता और अजमेर शरीफ़ में सरकार सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ अ़लैहिर्रहमा की बारगाहों में हाज़री दिया।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने पाकिस्तान, बुज़ुर्गाने मिस्र, बुज़ुर्गाने दिमश्क़, बुज़ुर्गाने उरदुन, बुज़ुर्गाने इराक़, बिलखुसूस हुज़ूर ग़ौसे आ़ज़म, इमामे आ़ज़म, करबला शरीफ़ के अ़लावा मक्का मुअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के बुज़ुर्गों की बारगाहों में हाज़री दी है।

हज़ व ज़ियारतः- हर मोमिन बिलख़ुसूस आ़शिक़े सादिक़ की तमन्ना होती है कि हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत से खुद को मुशर्रफ़ करे। अल्लाह तआ़ला ने सरकार ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा को इस तमग़े से भी ख़ूब नवाज़ा। आपने छः हज किए। पहला हज 1403 हिज्री मुताबिक़ सन 1983 ईस्वी, दूसरा हज 1405 हिज्री मुताबिक़ सन 1986 ईस्वी, तीसरा हज सन 1406 हिज्री मुताबिक़ सन 1987 ईस्वी, चौथा हज 1429 हिज्री मुताबिक़ 2008 ईस्वी, पांचवां हज 1430 हिज्री मुताबिक़ 2009 ईस्वी, छठा हज 1431 हिज्री मुताबिक़ 2010 ईस्वी में किया, इनके अ़लावा आपने कई उमरे किए और मदीना मुनव्वरा की हाज़री दी।

तालीम व तर्बियतः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के वालिद माजिद अ़ल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ान अ़लैहिर्रहमा ने आपकी रुहानी और जिस्मानी, ज़ाहिरी और बातिनी हर तरह की तर्बियत फ़रमाई और शानदार तर्बियत का इंतेज़ाम फ़रमाया। बड़े नाज़ व निअ़म से पाला और तमाम ज़रुरतों को पूरा फ़रमाया।

जब आप चार साल, चार माह, चार दिन के हुए तो तस्मिया ख़्वानी (बिस्मिल्लाह) का वालिदे माजिद ने एहतमाम किया, दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम के तलबा और मुदर्रिसीन की दावत फ़रमाई, अज़ीज व अक़ारिब और शहर के मोअ़ज़्ज़ज़ने को भी मदऊ फ़रमाया। हज़रत मुफ़स्सिरे आ़ज़मे हिन्द ने जानशीने आ़ला हज़रत हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़म की बारगाह में अ़रीज़ा पेश किया कि ''अख़्तर मियां'' की तस्मिया ख़्वानी की तक़रीब है, हुज़ूर शिरकत फ़रमायें और तस्मिया ख़्वानी भी करवाएं, हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़म अ़लैहिर्रहमा ने तस्मिया ख़्वानी करवाई।

नाज़िरा की तालीम आपने अपनी वालिदा माजिदा से हासिल की और इब्तिदाई किताबें ख़ुद मुफ़स्सिरे आ़ज़म ने पढ़ाई, उसके बाद दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम में दाख़िला करा दिया। पूरी मेहनत और लगन के साथ राइज दर्से निज़ामी कोर्स की तकमील यहीं की।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ को शुरु से मुतालआ़ का बे हद

शौक़ रहा। इमामे इल्म व फ़न हज़रत ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन अ़लैहिर्रहमा शैख़ुल हदीस दारुल उलूम चिर्रा मुहम्मदपुर फ़ैज़ाबाद फ़रमाते हैं:

हज़रत अज़हरी मियां को मैं ने तालिबे इल्मी के ज़माने में देखा मुतालआ़ के बे हद शौक़ीन हत्ता कि कभी कभार मस्जिद में आता तो देखता कि रास्ता चलते जहाँ मौक़ा मिला, किताब खोल कर पढ़ने लगते।

लोगों के इसरार पर आप 1963 ईस्वी में मशहूर यूनियर्सिटी जामिआ़ अज़हर, क़ाहिरा मिस्र ज़बान व अदब पर महारत हासिल करने के लिए तशरीफ़ ले गए, कुल्लिया उसूलुद्दीन में दाख़िला लिया और दीन के उसूलों पर रिसर्च की तालीम मुकम्मल की और अ़र्बी अदब में महारत हासिल की। मगर हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ मद्दाज़िल्लुहुल आ़ली से पूछने पर मालूम हुआ कि आप मिस्र जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकार मुफ़्ती ए आ़ज़म हिन्द अ़लैहिर्रहमा की बारगाह ही में रहना चाहते थे, चुनांचे कभी कभार फ़रमाते:

जो इल्मी व अदबी फ़ाइदा हज़रत (मुफ़्ती ए आ़ज़म) के पास रह कर हुआ, वह मिस्र में नहीं हुआ, काश! वो तीन साल भी हज़रत की ख़िदमत में ही गु़ज़रे होते, फिर फ़रमाते: मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द का इल्म बड़ा मज़बूत था। हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़म अ़लैहिर्रहमा की इल्मी महारत का तज़किरा हज़रत क़ाज़िये मिल्लत भी अकसर किया करते थे।

सन 1386 हिज्री 1966 ईस्वी में कुल्लिया उसूलुद्दीन क़िस्मुत्तफ़सीर वल हदीस की तकमील फ़रमाई। इस शोअबे में आपने अव्वल पोज़ीशन हासिल की, सालाना इमतिहान में मालूमाते आ़म्मा का तक़रीरी इमतिहान हुआ, जिसमें मुमतहिन ने इल्मे कलाम से मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया, जिसमें आपके हम सबक़ तलबा जवाब ना दे सके, मुमतहिन ने सवाल दोहराते हुए आपकी तरफ़ देखा और जवाब तलब किया, आपने उसका शानदार जवाब दिया, मुमतहिन ने पूछा आप शोअ़बा ए तफ़सीर व हदीस के मुतअ़ल्लिम हैं फिर भी इल्मे कलाम में यह गहराई? तब हज़रत ने फ़रमाया कि मैंने ''दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम'' में इल्मे कलाम पढ़ा है। इससे वह बहुत ख़ुश हुए और आपको हम सबक़ तलबा में सबसे ज़्यादा नम्बर दिए। रिज़ल्ट के बाद आपको अव्वल नम्बर पर आने की वजह से मिस्र के सदर कर्नल जमाल अब्दुन्नासिर साहब ने बतौर तमग़ा पेश किया और सनद भी अ़ता की, जब आप बरेली जंकशन उतरे, नार ए तकबीर व रिसालत से फ़ज़ा गूंज उठी। ख़ानवाद ए रज़विया के अफ़राद और शहर के मुअज़्ज़ज़ीन इस्तेक़बाल करते हुए दरगाह शरीफ़ तक लाए।

दर्स व तदरीसः- जब आप जामिआ़ अज़हर मिस्र से तशरीफ़ लाए तो मंज़रे इस्लाम मे मुदर्रिस मुक़र्रर हुए, यानी आपने 1967 ईस्वी से तदरीस का बा-ज़ाबता आग़ाज़ फ़रमाया, मुसलसल जिद्दो जुहद और मेहनत व लगन से पढ़ाते रहे, यहाँ तक कि 1978 ईस्वी में आप सदरुल मुदर्रिसीन के ओ़हदे पर फ़ाइज़ हुए।

मंज़रे इस्लाम का दारुल इफ़्ता भी आपके सिपुर्द हो गया, तक़रीबन 1980 ईस्वी में आप कसीर मसरुफ़ियत की वजह से मंज़रे इस्लाम से अलग हो गए। यह वह दौर है जिसमें सरकार मुफ़्ती ए आ़ज़म बीमार चल रहे थे। इस वजह से तबलीग़ी दौरे वग़ेरह भी दरपेश हो गए। 1981 ईस्वी में सरकार मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द का विसाल हो गया, उसके बाद आपकी मसरुफ़ियात और बढ़ गईं, फ़तावा नवेसी में आप मरजा ठहरे, इस वजह से आपने ''मरकज़ी दारुल इफ़्ता'' क़ाइम फ़रमाया जो अभी तक ब-हुस्न व ख़ूबी अपनी मंज़िल की तरफ़ रवां दवां है। मगर आपने दर्स व तदरीस, तसनीफ़ व तालीफ़, तअ़रीब (उर्दू से अ़रबी तर्जमा) व तर्जमा का काम मुतअस्सिर

ना होने दिया और ज़िंदगी भर यह सिलसिला जारी रहा।

इरादत व सुलूक और बैअ़त व ख़िलाफ़तः- बचपन ही में सरकार मुफ़्ती ए आ़ज़म हिन्द ने मुरीद कर लिया था, इस तरह ज़ाहिरी व बातिनी दोनों उलूम का आग़ाज़ सरकार मुफ़्ती ए आ़ज़म के फ़ैज़ से हुआ, तमाम राइज उलूम व फ़ुनून की तकमील के बाद 1371 हिज्री मुताबिक़ 15 जनवरी 1962 ईस्वी में महफ़िले मीलादुन्नबी (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की पुर नूर तक़रीब में अकाबिर उलमा की मौजूदगी में इज़ाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। इस मौक़े पर बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती बुरहानुल हक़ रज़वी जबलपुरी और शम्सुल उलमा क़ाज़ी शम्सुद्दीन अहमद रज़वी जअ़फ़री जौनपरी अ़लैहिर्रहमा के अ़लावा बहुत से हज़रात उलमा ए किराम और मोअ़ज़्ज़ीने शहर मौजूद थे।

इसी तरह हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ को ख़लीफ़ ए आला हज़रत हज़रत बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती बुरहानुल हक़ जबलपूरी, सय्यिदुल उलमा हज़रत सय्यद आले मुस्तफ़ा बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे मारहरा मुतहहरा शरीफ़ से भी इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल है। वालिद माजिद सरकार मुफ़स्सिरे आ़ज़मे हिन्द ने मुरव्वजा उलूम व फ़ुनून की फ़राग़त से पहले ही अपनी बीमारी की वजह से अपना क़ाइम मक़ाम यानी जानशीन बना दिया और तमाम सिललसिलों की इजाज़त व ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई।

बैनल अक़वामी पैमाने पर यह ख़बर इन्टरनेट पर नश्र हुई कि रॉयल इस्लामिक इस्टेडीज़ सेन्टर अ़म्मान की तय्यार कर्दा दुनिया की पांच सौ मोअस्सिर बा वक़ार अ़ज़ीम तरीन शख़्सियात की ताज़ा लिस्ट जारी हुई है जिसमें ताजुश्शरीआ़ हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी दामत बरकातहुमुल आ़लिया को दुनिया की 26वीं और हिन्दुस्तान की पहली मज़हबी मोअस्सिर बा वक़ार अ़ज़ीम तरीन शख़्सियत तस्लीम किया गया है।

यह ख़बर मुसलमानाने हिन्द और बिल ख़ुसूस सिलसिल ए क़ादिरिया बरकातिया रज़विया के लिए बड़ी फ़रहत बख़्श थी। आज के मीडिया के दौर में इस रुह अफ़्ज़ा ख़बर ने आनन-फ़ानन सरहदी दीवारों के क़ैद व बंद को चीरते हुए पूरी इस्लामी दुनिया में ख़ुशी की लहर दौड़ा दी और हर चहार जानिब हज़रत ताजुश्शरीआ़ की उम्र दराज़ी और सेहत व सलामती, दीनी व फ़िक़्ही ख़िदमात व असरात और सिलसिले के फ़रोग़ के लिए दुआ़ओं की मजलिसें मुनअ़क़िद होने लगीं। बारगाहे इलाही में उठे लाखों हाथों ने हज़रत के लिए दुआ़ की।

उसी सर्वे की रिपोर्ट में टॉप 50 मज़हबी रहनुमाओं में हिन्दुस्तान से सिर्फ़ तीन शख़्सिय्यात का इन्तिख़ाब किया गया, जिन में 26वें नम्बर पर पहला हिन्दुस्तानी नाम हज़रत ताजुश्शरीआ़ का रहा।

रॉयल इस्लामिक इस्टेडीज़ सेन्टर अ़म्मान के चीफ़ डायरेक्टर डॉक्टर ज़ोज़फ़ और एडीटर डॉक्टर आ़रिफ़ अ़ली (जार्डन, अ़म्मान) ने अपनी रिपोर्ट में तहरीर किया है कि ताजुश्शरीआ़ हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी हिन्दुस्तान के मुफ़्ती ए आ़ज़म और सुन्नी हनफ़ी बरकाती बरेलवी रहनुमा और काइद् हैं। दुनिया में बीस लाख़ बरकाती बरेलवी मुसलमान आपके मुरीद हैं। सब का बुनियादी अ़क़ीदा सुन्नी हनफ़ी सूफ़ी है।

मज़ीद लिखते हैं: अ़ल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी ऐसे माहौल में रुहानी और मज़हबी ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं, जहाँ दहशत गर्दी और अफ़रा-तफ़री का माहौल है, पूरा इलाक़ा दहशत गर्दाना तहरीकात से मुतअस्सिर है, उन इलाक़ों में और उस ख़ारदार माहौल में सूफ़ी

इज़्म की तबलीग़ और नश्र व इशाअ़त ख़ास्सा मुशकिल मरहला है। जहाँ एक तरफ़ फ़ितना व फ़साद की लहर चल रही है तो दूसरी तरफ़ आप शमे राहे हिदायत लिए अम्ने आ़लम की मिशअ़ल जला रहे हैं।

तसनीफ़ व तालीफ़ में दो दरजन से ज़्यादा अंग्रेज़ी और अ़रबी किताबें लिखीं, हज़ारों फ़तवे तहरीर किए, 2000 ईस्वी में मरकज़ुद्दिरासातिल इस्लामिया जामिअ़तुर्रज़ा के नाम से बरेली शरीफ़ में एक अ़ज़ीम इस्लामी दर्सगाह क़ाइम की।

आपने 52 से ज़्यादा मुल्कों का तबलीग़ी सफ़र करके सवादे आ़ज़म अहले सुन्नत का पैग़ाम पहुँचाया, बिल ख़ुसूस अ़रब दुनिया के उलमा व फ़ुज़ला और शुयूख़ ने सनदे हदीस की इजाज़तें तलब कीं और शागिर्दी की सफ़ में दाख़िल हुए।

एक अंदाज़े के मुताबिक़ हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के सैकड़ों शार्गिद और दो करोड़ के आस-पास मुरीद हैं।

चंद वेब साइटस:- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ शरीअ़ते इस्लामिया के सख़्त पाबंद और आ़मिल हैं। रॉयल इस्लामिक स्टेडीज़ सेन्टर की वेब साइट पर जहाँ दूसरे लोंगों के फ़ोटो लगाए गए हैं वहीं हज़रत के फ़तवे और तक़्वे का लिहाज़ करते हुए फ़ोटो से परहेज़ किया गया है। हज़रत के तअ़ल्लुक़ से दी गई तफ़सीलात में फ़ोटो ना लगा कर डायरेक्टर ने क़ाबिले तारीफ़ काम किया है।

तंज़ीमों से वाबस्तगी:- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ सुन्नी जमइयतुल उलमा के सदर, इमाम अहमद रज़ा एकेडमी के अहम ट्रस्टी और ऑल इंडिया जमाअ़ते रज़ाए मुस्तफ़ा (क़ाइम कर्दा आ़ला हज़रत) के सर परस्त रहे हैं। इसके अ़लावा अ़रब व अ़जम में कई तंज़ीमें और तहरीकें हैं जो मस्लके आ़ला हज़रत की तरवीज व इशाअ़त में कोशां हैं, आप पूरी उम्र उनकी सर परस्ती फ़रमाते रहे।

☆ ☆ ☆

ताजुश्शरीआ़ की अ़रब में... शेष पृष्ठ 11 का

तरफ़ शैख़ कबीर कह कर आगे बढ़ते और दुआ़ की दरख़्वास्त करते थे। पेशानी चूमते और पूछते कौन हैं? कहाँ से तशरीफ़ लाए हैं?

तक़रीबन 28 मिनट के बाद हज़रत काबा शरीफ़ से बाहर तशरीफ़ लाए तो बाहर आते ही लोगों ने अपने घेरे में ले लिया और बरकत हासिल करने के लिए दस्त बोसी वग़ैरह करने लगे। हज़रत ताजुशशरीअ़ह के साथ जो मख़सूस अफ़राद हिन्दुस्तान या सऊदी अ़रब के थे, उन्होंने मौक़ा ग़नीमत जानते हुए ज़ेबे तन लिबास को बतौरे तबर्रूक हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से हासिल कर लिया। हज़रत मौलाना अ़सजद रज़ा ख़ान साहब से पूछने पर मालूम हुआ कि अंदरुने काबा अंबिया ए किराम से मंसूब बहुत से तबर्रूकात रखे हुए हैं।

हज़रत के अंदरुने काबा दाख़िल होने की फ़रहत बख़ूश ख़बर जूं ही आपके मुरीदों, अ़क़ीदत मंदों और ख़ुश अ़क़ीदा मुसलमानों के बीच पहुँची, मुबारक बादियों का ना थमने वाला सिलसिला शुरु हो गया।

हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़म राजस्थान अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अशफ़ाक़ हुसैन नईमी अ़लैहिर्रहमा ने इस मौक़े पर मुबारक बादी के साथ एक ख़ास बात कही: साहब! हम लोगों के लिए यह बड़ी बात है और हम सब सुन्नी हज़रत के दिल में रह कर काबा के अंदर दाख़िल हो गए।

जब आप बरेली शरीफ़ तशरीफ़ लाए तो पूरे शहर ने शानदार इस्तिक़बाल किया और जुलूस की शक्ल में इज़हारे मसर्रत करते हुए, नार ए तकबीर व रिसालत बलंद करते हुए दरगाहे आ़ला हज़रत पहुँचे। अल्लाह तआ़ला हम सब वाबस्तगाने ताजुश्शरीआ़ को आपके रूहानी, इल्मी और अ़मली फ़ैज़ान से माला माल फ़रमाए।

☆ ☆ ☆

ताजुश्शरीआ़ की इल्मी शान और तालीमी व तमीरी ख़िदमात

–मौलाना अब्दुल रहमान कादरी

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की पूरी ज़िंदगी दीनी, मिल्ली, मसलकी और इल्मी खि़दमात से ताबीर रही। आपने यूं तो ज़िंदगी का बड़ा हिस्सा तबलीग़ी सफ़र में गुज़ारा जिसकी वजह से आपको बहुत ज़्यादा इतमीनान का मौक़ा ना मिलता था लेकिन इस हमाहमी वाली ज़िंदगी के बावजूद आपने तालीमी और तामीरी ख़िदमात में कोई कसर बाक़ी ना छोड़ी। हम यहाँ बहुत मुख़्तसर अंदाज़ में आपकी उन ख़िदमात का जाइज़ा ले रहे हैं जो कुछ इस तरह हैं:

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की तामीरी ख़िदमात का दाइरा इन इदारों के गिर्द मुहीत रहा: (1) मरकज़ी दारुल इफ़्ता, (2) मरकज़ी दारुल क़ज़ा, (3) शरई कौंसिल ऑफ़ इंडिया, (4) मरकज़ुद्दिरासातिल इस्लामिया जामिअ़तुर्रज़ा, (5) अज़हरी मेहमान ख़ाना और (6) अज़हरी गेस्ट हाउस।

ये तमाम इदारे ब–हुस्न व ख़ूबी अपनी ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं। दारुल इफ़्ता से काफी तादाद में फ़तावा सादिर किए जाते हैं। अहले सुन्नत वल जमाअ़त में इस दारुल इफ़्ता की बड़ी अहमियत है। कोहना मश्क़ मुफ़्ती, माहिरे जु़ज़इय्यात, उस्ताज़ुल फ़ुक़हा हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी मोहम्मद अ़ब्दुर्रहीम बस्तवी सन 1983 ईस्वी से ता ज़िंदगी यहीं रहे, उनके फ़तावा का अहम ज़ख़ीरा मौजूद है।

मरकज़ी दारुल क़ज़ा में रूयते हिलाल, (चांद कमेटी) मुक़द्दमे वग़ैरह के फ़ैसले होते हैं। शरई कौंसिल ऑफ़ इंडिया के तहत 21 नए उनवानों पर सेमीनार हो चुके हैं।

जामिअ़तुर्रज़ा में 55 स्टाफ़ और मुलाज़िमीन का अ़मला काम कर रहा है। 660 तलबा फ़िलहाल ज़ेरे तालीम हैं। हिफ़्ज़ व क़िराअत, दर्से निज़ामी पर मुश्तमिल निसाबे तालीम है। दीनी व दुनियावी दोनों शोबों के तलबा यहाँ तालीम हासिल कर रहे हैं।

आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अ़लैहिर्रहमा के मज़ार मुबारक के ज़ाइरीन को काफ़ी दिक़्क़तों का सामना करना पड़ता था, इस वजह से हज़रत ताजुश्शरीआ़ ने उनके लिए क़याम का इंतिज़ाम फ़रमाया। हज़रत ने पूरा काशान ए आ़ला हज़रत जो ग़ैरों के पास चला गया था, हासिल कर के उस पर नई तामीर करवाई और मुस्तक़बिल क़रीब में जामिअ़तुर्रज़ा के ग्राउन्ड में इंशाअल्लाहु तआ़ला ''हामिदी मस्जिद'' दावते नज़्ज़ारा देगी।

फ़तवा नवेसी:– 1816 ईस्वी में रोहिल्ला हुकूमत के ख़ात्मे के बाद बरेली शरीफ़ पर अंग्रेज़ों का क़बज़ा हो गया था और हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद एवज़ अ़लैहिर्रहमा के रोहेलखंड (बरेली) से टोंक तशरीफ़ लाने के बाद बरेली की मसनदे इफ़्ता ख़ाली थी। ऐसे नाज़ुक और पुर आशोब दौर में इमामुल उलमा अ़ल्लामा मुफ़्ती रज़ा ख़ान नक़्शबंदी अ़लैहिर्रहमा ने बरेली की मसनदे इफ़्ता को रौनक़ बख़्शी और खानवाद ए रज़विया में फ़तवा नवेसी की अ़ज़ीमुश्शान रिवायत की इब्तिदा हुई।

लेकिन मजमूआ़ फ़तावा बरेली शरीफ़ में आपकी फ़तवा नवेसी की इब्तिदा 1831 ईस्वी लिखी है। शायद इस दरमियानी ज़माने में अंग्रेज़ क़ाबिज़ों की रेशा दवानियों के सबब यह मसनद ख़ाली रही।

अल–हम्दु लिल्लाह! सन 1831 ईस्वी से आज तक यह सिलसिला जारी है यानी खानवाद ए रज़विया में फ़तावा नवेसी की ईमान अफ़रोज़ रिवायत 187 साल से मुसलसल चली आ रही है। इमामुल फ़ुक़हा, हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा अ़ली ख़ान क़ादरी बरेलवी, इमामुल मुतकल्लिमीन हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद नक़ी अ़ली ख़ान क़ादरी बरकाती, आ़ला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती, जमालुल अनाम हज़रत अ़ल्लामा

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती, शहज़ाद ए आ़ला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान क़ादरी नूरी, नबीर ए आ़ला हज़रत, मुफ़स्सिरे आ़ज़मे हिन्द हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ान क़ादरी रज़वी और इनके बाद क़ाजियुल क़ज़ात फ़िल हिन्द, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी अ़लैहिमुर्रहमा यके बाद दीगरे फ़तवा नवेसी का फ़रीज़ा अंजाम देते रहे।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा 1967 ईस्वी से ता दमे विसाल तक़रीबन 51 साल तक पूरी पाबंदी के साथ इस ख़िदमत को ब-हुस्न व ख़ूबी सरे अंजाम देते रहे। आपके फ़तवों की तादाद भी कई जिल्दों पर मुहीत हो सकती है जबकि इस ख़ानवादे के दूसरे उलमा जैसे हुज्जतुल इस्लाम अ़ल्लामा हामिद रज़ा ख़ान, मुफ़्ती ए आ़ज़म हिन्द अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान और बिल ख़ुसूस आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अ़लैहिर्रहमा के फ़तवों का मजमूआ़ फ़तावा रज़विया पूरी दुनिया में अपनी पहचान बना चुका है।

वाज़ व तक़रीरः- वालिद माजिद हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ मुफ़स्सिरे आ़ज़मे हिन्द अ़ल्लामा मुफ़्ती इब्राहीम रज़ा ख़ान जीलानी अ़लैहिर्रहमा को क़ुदरत ने ज़ोरे खिताबत और क़ुव्वते बयान से ख़ूब नवाज़ा था। हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ को तक़रीर व ख़िताबत का मलका अपने वालिद माजिद से वरासत में मिला है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की तक़रीर इंतिहाई मोअस्सिर, निहायत जामे, पुर मग़ज़, दिल पज़ीर और दलाइल से मुज़य्यन होती। उर्दू ज़बान तो आपकी मादरी ज़बान है, मगर अ़रबी ज़बान और अंग्रज़ी में भी आपको महारत, अहले ज़बान के लिए बाइसे हैरत होती। इसका अंदाज़ा हज़रत मुहद्दिसे कबीर अ़ल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा आ़ज़मी दामत बरकातहुमुल आ़लिया के इस बयान से बा आसानी किया जा सकता है:

अल्लाह तआला ने आपको कई ज़बानों पर मलका ए ख़ास अ़ता फ़रमाया है। उर्दू आपकी घरेलू ज़बान है और अ़रबी आपकी मज़हबी ज़बान है। इन दोनों ज़बानों में आपको खुसूसी मलका हासिल है। अ़रबी के क़दीम व जदीद उस्लूब पर आपको मलका ए ख़ास और रुसूख़ हासिल है। मैं ने इंग्लैंड, अमरीका, साउथ अफ़रीक़ा और ज़िम्बाबवे वग़ैरह में बरजस्ता अंग्रेज़ी ज़बान में तक़रीर व वाज़ करते देखा है और वहाँ के तालीम याफ़्ता लोगों से आपकी तारीफ़ें भी सुनी हैं और यह भी उन से सुना है कि हज़रत को अंग्रेज़ी ज़बान के क्लास्की उस्लूब पर उबूर हासिल है।

इल्मे हदीसः- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ इस मैदान के भी शहसवार थे। इल्मे हदीस एक लंबा चौड़ा मैदान है जिसमें कई एक मौज़ूआ़त पर बहुत सारे उलूम और मुख़्तलिफ़ फ़ुनून में महारत ज़रूरी होती है।

नातिया शाइरीः- नात गोई का बुनियादी तौर पर मुहर्रिक इश्क़े रसूल है। और शाइर के अंदर इश्क़े रसूल जितना गहरा पाया जाएगा या जिस नौइयत का होगा, उसकी कही हुई नातें भी उतनी पुर असर और पुर सोज़ होंगी।

सय्यदिना आ़ला हज़रत के इश्क़े रसूल ने उनकी शाइरी को जो इम्तियाज़ और इंफ़िरादियत बख़्शी, उर्दू शाइरी उसकी मिसाल लाने से आ़जिज़ है। आपकी नातिया शाइरी का ऐतिराफ़ करते हुए आपको दुनिया भर में ''इमामे नात गोयां'' के लक़ब से पहचाना जाता है।

आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अ़लैहिर्रहमा की इस ला जवाब तर्ज़ की झलक आपके ख़ोलफ़ा और मुतअ़ल्लिक़ीन और ख़ानदान के शोअ़रा में नज़र आती है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ को जहाँ और मैदानों में आ़ला हज़रत अ़लैहिर्रहमा की वरासत मिली है, वहीं नातिया शौक़ और शाइराना ज़ौक़ भी आ़ला हज़रत से बतौरे वरसा मिला है। शायद यही वजह है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की नातिया शाइरी में आ़ला हज़रत के कलाम की गहराई

और गीराई नज़र आती है। जबकि उस्ताज़े ज़मन की रंगीनी और रवानी, हुज्जतुल इस्लाम की फ़साहत व बलाग़त, मुफ़्ती ए आ़ज़म की सादगी और खुलूस का अ़क्स भी एक साथ नज़र आता है। आपकी शाइरी मअ़नविय्यत, पैकर तराशी, सरशारी व शियुफ़्तगी, फ़साहत व बलाग़त, हलावत व मलाहत, जज़्ब व कैफ़ और साज़ व गुदाज़ का नादिर नमूना है। आपके नातिया दीवान का नाम ''सफ़ीना ए बख़्शिश'' है।

''सफ़ीना ए बख़्शिश'' केवल एक शाइराना ज़ौक़ की तकमील नहीं बल्कि एक दीवान की रूह इश्क़े रिसालत और अहलुल्लाह की मुहब्बत का जज़्बा दिलों में अ़क़ीदे की सूरत रासिख़ करना है।

इस दीवान में उर्दू के साथ फ़ारसी और अ़रबी के भी नादिर नमूने हैं। अ़रबी में कोई बीसियों नातें हैं और माज़ी क़रीब की नातिया रिवायत में यह वह ख़ूबी है जो किसी और दीवान में नज़र नहीं आती।

इस दीवान में नातों के साथ अल्लाह वालों की शान में मनक़बतों का भी एक ख़ास हिस्सा है और इसी तरह दूसरे असनाफ़े सुख़न के भी नमूने हैं। इस तरह आपकी शाइरी अपने आप में बहुत गहराई भी रखती है और बहुत तनव्वु भी।

इमामत व ख़िताबत:– हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ तालिबे इल्मी के ज़माने से ही इमामत के फ़राइज़ अंजाम देने लगे थे, वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आ़ज़म हिन्द हज़रत मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ान जीलानी बरेलवी अ़लैहिर्रहमा ने बा-ज़ाब्ता तौर पर रज़ा मस्जिद की इमामत व ख़िताबत के अ़ज़ीम मंसब के लिए तहरीरी वसिय्यत नामा जारी कर दिया था।

हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द अ़लैहिर्रहमा का मामूल था कि जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ साथ होते तो आपको ही नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाते। एक लंबे ज़माने तक बरेली में नमाज़े ईदैन की ईदगाह में इमामत के फ़राइज़ अंजाम देते रहे, जब आप क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करते या ख़ुतबा पढ़ते तो लहने दाउदी की याद कानों में बाज़ गश्त करने लगती। आपकी क़िराअत में अ़रबी और मिस्री लब व लहजा पाया जाता।

तर्जमा निगारी:– तर्जमा निगारी इंतिहाई मुश्किल फ़न है। तर्जमा का मतलब किसी ज़बान के मज़मून को उसी अंदाज़ से दूसरी ज़बान में मुंतक़िल करना होता है और वह भी इस अंदाज़ से कि क़ारी को एहसास भी ना होने पाए। ना यह पता चले कि इबारत बे तरतीब है और ना यह कि उस में पेवंद कारी की गई है। जूं का तूं तर्जमा करना बड़ा मुश्किल काम है। इस में एक ज़बान के मआ़नी और मतालिब को दूसरी ज़बान में इस तरह मुंतक़िल किया जाता है कि अस्ल इबारत की ख़ूबी और मतलब व मफ़हूम क़ारी (पढ़ने वाले तक) तक सही सलामत पहुँच जाए। इस बात का पूरा ख़याल रखा जाए कि अस्ल इबारत ना सिर्फ़ पूरे ख़यालात और मफ़हूम बल्कि लहजा और अंदाज़, चाशनी, जाज़िबय्यत और दिलकशी, सख़ूती व दुरुस्तगी, कैफ़ व रंग, उसी एहतियात के साथ आए जो लिखने वाले का मंशा है, ज़बान व बयान का मेअ़यार अस्ल के मुताबिक़ हो।

इल्मी और अदबी तर्जमों में आ़म तौर पर सिर्फ़ अदबी ऐब व हुनर देखे जाते हैं लेकिन दीनी किताबों के तर्जमों में और ख़ास तौर पर क़ुरआन व हदीस से मुतअ़ल्लिक़ तर्जमों में इंतिहाई मुश्किल और दिक़्क़त तलब काम यह भी होता कि उनमें ख़ास तौर पर शरई एतिबार मलहूज़ होता है और हर वक़्त यह ख़तरा लाहिक़ रहता है कि कहीं अस्ल मायनों में तहरीफ़ ना हो जाए क्योंकि ऐसा होने से सारा किया धरा बर्बाद हो सकता है और इस पर शरई मुआख़ज़ा मुस्तज़ाद। इस नाज़ुक मरहले का सही अंदाज़ा वही लोग कर सकते हैं जिन्हें इससे वास्ता पड़ा हो। हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा को जहाँ दूसरे बहुत से उलूम व फ़ुनून पर मुकम्मल दस्तर्स हासिल थी, जिस पर आपकी किताबें गवाह हैं, वहीं तर्जमा कारी पर भी आपको ज़बरदस्त महारत थी और आपकी यह महारत किसी एक ज़बान से ख़ास ना थी बल्कि जैसे उर्दू अदब पर मज़बूत पकड़ थी, आपकी

अ़रबी भी उतनी आ़ला थी और अंग्रेज़ी भी उसी तरह रवां थी।

उर्दू से अ़रबी और अ़रबी से उर्दू में आपने बहुत से तर्जमे किए जबकि ज़ाहिर में एक जैसा दिखने वाला यह काम किसी भी तरह एक नहीं बल्कि जिस ज़बान से तर्जमा करना हो, उसमें जितनी ज़्यादा महारत दरकार होती है, उससे कई गुना ज़्यादा उस ज़बान में महारत चाहिए जिसमें तर्जमा करना हो और चूँकि आप अ़लैहिर्रहमा ने उर्दू से अ़रबी और अ़रबी से उर्दू दोनों में तर्जमे किए हैं, इस लिए यह मानना पड़ेगा कि आपको इन दोनों ज़बानों में उस्ताज़ी महारत हासिल थी।

ज़बान दानी का सुबूत केवल तर्जमा कारी या तहरीर नहीं होती बल्कि इनसे भी कई गुना ज़्यादा हक़ीक़त उस वक़्त खुलती है जब साहिबे ज़बान बोलता है क्योंकि लिखने में सोचने समझने और इतमीनान से ग़ौर व फ़िक्र करने का पूरा मौक़ा मिलता है जबकि बोलने में इन चीज़ों का बिलकुल मौक़ा नहीं मिलता इसी वजह से बोलने में ज़बान दानी का भरम नहीं पाला जा सकता और बोलने की ज़बान जितनी अदबी होगी, आदमी उतना ही माहिर माना जाएगा क्योंकि सादा अंदाज़ में अपने दिल की बात कहना तो स्पीकिंग जैसे कोर्सेज़ के ज़रीआ़ भी मुमकिन है लेकिन हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा जैसी फ़सीह अ़रबी और उर्दू बोलते लिखते थे, वो अहले ज़बान व अदब के लिए भी हैरान कुन थी और यह कोई अ़क़ीदत मंदी का दावा नहीं बल्कि आपकी दरजनों किताबों की रोशनी में ज़मीनी हक़ीक़त है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के असातिज़ा:– हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा ने जिन असातिज़ा से ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर उलूम व फुनून हासिल किए और जिनसे फ़ैज़ हासिल किया, उनकी फ़ेहरिस्त कुछ यूं है:

(1) जानशीने आ़ला हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़म अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान नूरी अ़लैहिर्रहमा, बरेली शरीफ़

(2) जानशीने आ़ला हज़रत शहज़ाद ए हुज्जतुल इस्लाम मुफ़स्सिरे आ़ज़म अ़ल्लाम इब्राहीम रज़ा ख़ान क़ादरी अ़लैहिर्रहमा, बरेली शरीफ़

(3) बहरुल उलूम हज़रत अ़ल्लाम मुफ़्ती सय्यद अफ़ज़ल हुसैन मुंगेरी, पाकिस्तान अ़लैहिर्रहमा

(4) सय्यदुल उलमा हज़रत अ़ल्लामा सय्यद आले मुस्तफ़ा क़ादरी बरकाती अ़लैहिर्रहमा, मारेहरा शरीफ़

(5) अहसनुल उलमा हज़रत हज़रत सय्यद हसन हैदर क़ादरी बरकाती अ़लैहिर्रहमा, मारेहरा शरीफ़

(6) ख़लीफ़ ए आ़ला हज़रत बुरहाने मिल्लत अ़ल्लामा मुफ़्ती बुरहानुल हक़ अ़लैहिर्रहमा, जबलपुर

(7) वालिदा माजदा शहज़ादी ए हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़म अ़लैहर्रहमा, बरेली शरीफ़

(8) रेहाने मिल्लत हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद रेहान रज़ा ख़ान रहमानी मियां अ़लैहिर्रहमा, बरेली शरीफ़। रेहाने मिल्लत अ़लैहिर्रहमा आपके सगे बड़े भाई हैं।

(9) हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद इनआ़मुल्लाह ख़ान तसनीम हामिदी अ़लैहिर्रहमा, बरेली शरीफ़

(10) फज़ीलतुश्शैख़ हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद समाही शैख़ुल हदीस वत्तफ़सीर, जामिआ़ अज़हर, क़ाहिरा, मिस्र

(11) फज़ीलतुश्शैख़ हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार, उस्ताज़ुल हदीस, जामिआ़ अज़हर, क़ाहिरा, मिस्र

(12) फज़ीलतुश्शैख़ हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुत्तव्वाब मिस्री, उस्ताज़ मंज़रे इस्लाम, बरेली शरीफ़

(13) सदरुल उलमा हज़रत अ़ल्लामा तहसीन रज़ा ख़ान साहब अ़लैहिर्रहमा

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा जो सनदे हदीस अपने शार्गिदों को अ़ता फ़रमाते, उस में सब पहला नाम सदरुल उलमा अ़ल्लामा तहसीन रज़ा ख़ान क़ादरी मुहद्दिसे बरेलवी अ़लैहिर्रहमा का है।

इस फ़ेहरिस्त पर नज़र डालने वाला इस बात का अंदाज़ा लगा सकता है कि यह कितनी क़ीमती है। ज़ाहिर है इसमें से हर एक वह है जिसके तअ़ल्लुक़ से लिखा जाए तो एक दफ़्तर तैयार हो जाए जिसकी इस मुख़्तसर में गुंजाइश नहीं।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़रब व अ़जम के दाई

-मुफ्ती गुलाम जिलानी अज़हरी
खंडवा, मध्य प्रदेश

हिन्दुस्तान की मोअ़तबर तारीख़ ''तारिख़े फ़रिश्ता'' में है: निज़ामे दुनिया चलाने के लिए एक वक़्त में 315 औलिया ए किराम मौजूद होते हैं। मैं समझता हूँ, उन्हीं में से एक हुज़ूर ताजुष्षरीआ़ अ़लैहिर्रहमा की ज़ात थी।

पूरा नसब नामा:- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का सिलसिला ए नसब आ़ला हज़रत को दादा और नाना बनाते हुए सहाबी ए रसूल क़ैस मलिक अ़ब्दुर्रशीद तक पहुँचता है।

अ़ल्लामा अख़तर रज़ा ख़ान अज़हरी बिन इब्राहीम रज़ा ख़ान बिन हामिद रज़ा ख़ान बिन इमाम अहमद रज़ा ख़ान (आ़ला हज़रत) बिन इमाम नक़ी अ़ली ख़ान बिन इमाम रज़ा अ़ली ख़ान बिन मौलाना काज़िम अ़ली ख़ान बिन मौलाना शाह मोहम्मद आ़ज़म ख़ान बिन मौलाना मोहम्मद सआ़दत यार ख़ान बिन शुजाअ़त जंग मोहम्मद सईदुल्लाह ख़ान बहादुर क़ंधारी बिन अ़ब्दुर्रहमान ख़ान क़ंधारी बिन यूसुफ़ ख़ान बिन दौलत ख़ान बिन बादल ख़ान बिन दाऊद ख़ान बिन बड़हेच ख़ान बिन शरफुद्दीन बिन इब्राहीम बिन सय्यिदुना क़ैस मलिक अ़ब्दुर्रशीद सहाबी ए रसूल।

फख़्रे अज़हर:- हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की तालीम दुनिया की सबसे पुरानी इस्लामी युनिवर्सिटी जामिआ़ अज़हर में हुई। 4 मई 2009 की बात है, मैं खुद जामिआ़ अज़हर में ज़ेरे तालीम था, कुल्लिया दावत के एसी हाल में प्रोग्राम हुआ जिसके बाद आपको अद्दिरउल फ़ख़्री नाम कि चादर उढ़ा कर शेख़ुल अज़हर मोहम्मद सय्यद तनतावी अ़लैहिर्रहमा ने फ़ख़्रे अज़हर एवार्ड दिया। उसी वक़्त से दुनिया ए सुन्नियत में हुज़ूर ताजुष्षरीआ़ को फ़ख़्रे अज़हर के नाम से भी जाना जाता है।

आपके दौर ए मिस्र के वक़्त वहाँ आपका प्रोग्राम हुआ। प्रोग्राम के पोस्टर में साफ़ लिखा था ''मम्नूअुत्तस्वीर'' यानी हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की ज़ात आज भी तसवीर कि हुर्मत की क़ाइल है लिहाज़ा कोई साहब फोटो ना लें।

मगर हुस्न को देख कर कौन आ़शिक बेकाबू ना हो, कुछ तलबा ने फ़ोटो लेना शुरू कर दिया, उसी वक़्त नक़ीबे इजलास ने ऐलान किया: बराए मेहरबानी आप लोग फ़ोटो ना लें क्योंकि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के यहाँ तस्वीर कशी हराम है। यह ऐलान सुनते ही तलबा ने फ़ोटो ग्राफ़ी रोक दी। दाऐं बाऐं कुर्सियों पर अज़हर युनिवर्सिटी के बड़े-बूढ़े मुफ्ती, दकातिरा और शुयूख़ बैठे हुए थे। बीच वाली कुर्सी हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के लिए ख़ाली थी। आप निहायत आ़लिमाना वक़ार और दाइयाना शान व शौकत के साथ जलवा अफ़रोज़ हुए।

फ़ुसाहा ए मिस्र और उलमा ए अज़हर की मौजूदगी में फ़सीह व बलीग़ अ़रबी ज़बान में तक़रीर फ़रमाई। तलबा मआ़नी के साथ आपकी ज़बानी महारत पर हैरान थे। वहाँ आख़िर में हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से एक सवाल हुआ: बरेलवी किसको कहते हैं?

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने फ़रमाया: मशरब के ऐतिबार से हम लोग क़ादरी हैं, अ़क़ीदे में मा-तुरीदी हैं और मज़हब के ऐतिबार से हनफ़ी हैं। हमारे मुख़ालिफ़ीन हम को बरेलवी कहते हैं जैसे हिजाज़, दिमश्क़ और मिस्र में अहले सुन्नत वल जमाअ़त को मुख़ालिफ़ीन सूफ़ी कहते हैं।

''बरेलवी'' नाम मुख़ालिफ़ीन का दिया हुआ है, यह हम ने सबसे पहले अ़ल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही, साबिक़ प्रिंसिपल: जामिआ़ अशरफ़िया, मुबारकपुर से सुना था। मगर हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की ज़बानी भी यह बात सुन कर मज़ीद तौसीक़ हुई और यह सुन कर इल्म में इज़ाफ़ा भी हुआ कि हिजाज़ वगैरह में अहले सुन्नत को सूफ़ी कहा जाता है।

दावती सफ़र:- ख़ानवाद ए रज़ा में सबसे ज़्यादा आपने

सफ़र फ़रमाया। आपके तमाम असफ़ार का बुनियादी मक़सद ''मसलके आ़ला हज़रत का तआ़रुफ़'' था। हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का सफ़र चाहे मुरीद करने के लिए हो या निकाह पढ़ाने के लिए, मुनाज़रा के लिए हो या जलसा और कॉंफ्रेंस के लिए, यह जरूर इरशाद फ़रमाते: मसलके आ़ला हज़रत ही सच्चा मज़हब है।

आपने शाम, यमन, इराक़, तुर्की, अफ्रीक़ा, सऊदी अ़रब, दुबई, मॉरिशस, लंदन, पाकिस्तान और श्रीलंका वग़ैरह का बारहा सफ़र किया।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ कि हक़ गोई:- पोरबंदर (गुजरात) में आप अकसर दौरा फ़रमाते थे। मेरी नज़र में यह गुजरात का अकेला ऐसा शहर है, जहाँ के बाशिंदे सबके सब सुन्नी हैं। कुछ मोअ़तबर लोगों ने बताया जब जलसा शबाब पर था, दौराने तक़रीर एक मुक़र्रिर ने कहा: अशरफ़िया मुबारकपुर सुलह कुल्लियों का हो चुका है, वहाँ अब चंदा ना दें।

जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने ख़िताब फ़रमाना शुरू किया तो खुल्लम खुला ऐलान फ़रमाया: अशरफ़िया कल भी हमारा था, आज भी हमारा है और इंशा अल्लाह कल भी हमारा रहेगा।

इसी तरह मुम्बई में एक तक़रीर के दौरान एक ख़तीब ने कहा: अस्ली सय्यिद वह हैं जिनकी रगों के खून से आ़ला हज़रत की मुहब्बत की बू आती हो। जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के पास माइक आया तो आपने फ़रमाया: इन्होंने (ख़तीब) जो कुछ कहा, उसके ज़िम्मेदार यह खुद हैं, मैं इससे बरी हूँ।

इस तरह की कोई सैकड़ों मिसालें मिलेंगी जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने ख़िलाफ़े शरीअ़त बातों की अ़लानिया मुख़ालफ़त की और रोका-टोका।

मेहमाने काबा:- 1 शाबान 1434 हिज्री मुताबिक 10 जून 2013 ईस्वी बरोज़ पीर 6:05 मिनट पर आप काबा शरीफ़ के अंदर दाख़िल हुए। यह आप पर अल्लाह का तआ़ला ख़ास करम है कि उसने आपको अपने घर का मेहमान बनाया।

बालासोर उड़ीसा में प्रोग्राम के दौरान नाचीज़ अपने उस्ताद मुफ्ती आले मुस्तफ़ा मिस्बाही से अपनी क़यामगाह में इल्मी इस्तिफ़ादा करते हुए अ़र्ज़ कर रहा था: हुज़ूर! यह बताऐं कि अभी कोई मुज्तहिद है या नहीं?

मुफ्ती साहब ने फ़रमाया: नहीं। नाचीज ने कहा: फिर सेमिनार में नए मसाइल पास हो रहे हैं, वो क्या हैं? मुफ्ती साहब ने फ़रमाया: ये मजमूई तौर पर इज्तिहादी फैसले हैं यानी मुफ्तियों का मजमूआ़ मुज्तहिद है।

इसी दौरान एक साहब तशरीफ़ लाए और कहा: कुछ लोग यह कह रहे हैं कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का गुस्ले काबा के लिए जाना, बद अ़क़ीदा लोगों की दावत क़ुबूल करना है। इसका जवाब आप प्रोग्राम में दें। मुफ्ती आले मुस्तफ़ा साहब ने प्रोग्राम में जवाब देते हुए फ़रमाया: यह हुकूमत का मामला है, बद अ़क़ीदों से मुवालात नहीं और ऐसे मौक़ों पर सिर्फ़ फैज़ हासिल करना मक़सूद होता है, हज़रत का मक़सद भी अल्लाह के घर से बरकत हासिल करना था, इस लिए अकाबिरीन की बुराई करने से परहेज़ करना चाहिए, यह ग़ैर मुनासिब है।

बे मिसाल तक़वा:- 17 रजबुल मुरज्जब 1438 मुताबिक़ 5 अप्रैल 2018 को बाद नमाज़े मग़रिब उर्से तहसीनी से 1 दिन पहले नाचीज़ अपने शैख़ हुज़ूर मोहद्दिसे कबीर के साथ हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के काशाना मोहल्ला सोदागरान, बरेली शरीफ़ हाज़िर हुआ।

मैं ने अपनी सर की आँखों से यह देखा कि हुज़ूर मोहद्दिसे कबीर ने निहायत आ़जिज़ी के साथ मुर्शिदे गिरामी हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ और शाहजादा ए ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा असजद मियाँ की दस्त बोसी की।

इससे चंद साल पहले जामिआ़तुर्रज़ा में मैं ने यह देखा कि अ़ल्लामा साहब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की ताज़ीम में खड़े हैं और हुज़ूर ताजुश्शरीआ़, अ़ल्लामा साहब कि ताज़ीम के लिए खड़े हैं।

इस मौक़े पर हुज़ूर मोहद्दिसे कबीर ने अ़ल्लामा अ़सजद मियाँ से नाचीज़ का तआ़रुफ़ कराते हुए ख़िलाफ़त की दरख़्वास्त की। अ़ल्लामा अ़सजद **शेष पृष्ठ 31 पर**

अरबी-उर्दू शजर ए रज़विया

- मौलाना मोहम्मद इमरान बरकाती
शेरानी आबाद, नागौर, राजस्थान

किसी भी रूहानी सिलसिले के लिए शजर ए तरीक़त की बड़ी अहमियत होती है। तबर्रूक की निय्यत से पढ़ना और बतौरे विर्द जारी रखना मुरीदों की आदत होती है। हम यहाँ इसी निय्यत से पूरा शजर ए रज़विया लिख रहे हैं ताकि फ़ैज़ हासिल करने वाले फ़ैज़ हासिल कर सकें।

अ़रबी शजरा शरीफ़ः- बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। नहमदुहु व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम। अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मद मअ़्दिनिल जूदि वल करम व आलिहिल किराम अजमईन।

(1) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल करीम अ़लिय्यिनिल मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहह।

(2) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल इमामि हुसैनिश्शहीदि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(3) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल इमामि अ़लिय्यिब्निल हुसैनि ज़ैनिल आ़बिदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा

(4) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल मुहम्मदिब्नि अ़लिय्यिनिल बाक़िरि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा

(5) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल इमामि मुहम्मदिब्नि जअ़फ़रिब्नि मुहम्मदिब्निस्सादिक़ि रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हुमा

(6) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल इमामि मूसब्नि जअ़फ़रिनिल काज़िमि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा

(7) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल इमामि अ़लिय्यिब्नि मूसर्रिज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा

(8) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि मअ़रुफ़ि निल कर्ख़ी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(9) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि सिर्रिय्यि निस्सक़ती रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(10) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि जुनैदि निल बग़दादिय्य रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु

(11) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि अबी बक्रि निश्शिब्लिय्यि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(12) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि अबिल फ़ज़्लि वाहिदित्तमीमीय्यि रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु

(13) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि अबिल फ़रहित्तरतूसिय्यि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(14) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि अबिल हसनि अ़लिय्यि निल क़रशिय्यिल हक्क़ारिय्यि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(15) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि अबी सईदिनिल मख़्ज़ूमिय्यि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहु

(16) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल करीम ग़ौसिस्सक़लैनि व ग़ौसिल क़ौनैनिल इमामि अबी मुहम्मदिन अ़ब्दिल क़ादिरिल हसनिय्यिल हुसैनिय्यिल जीलानिय्यि सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला जद्दिहिल करीमि व फ़ुरुइहिल ख़िफ़ामि व मुहिब्बीहि वल मुन्तमीना इलैहि इला यौमिल क़ियामि व बारिक वसल्लिम अबदा

(17) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल अबी बक्रिन ताजिल मिल्लति वद्दीनि अ़ब्दिर्रज़्ज़ाक़ि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(18) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल अबी स्वालिहीन नस्रिन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(19) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल मुहिय्यिद्दीन अबी नस्रिन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(20) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल अ़लिय्यि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(21) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल मूसा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(22) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल हसनि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(23) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल अहमदल जीलानिय्यि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(24) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि बहाइद्दीनि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(25) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल इब्राहीम अल ईरजिय्यि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(26) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि मुहम्मद भिकारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(27) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलल क़ाज़ी ज़ियाइद्दीन अल मअ़रुफ़ बिश्शैख़ि ज़िया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(28) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलश्शैख़ि जमालिल औलिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(29) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल मुहम्मदिन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(30) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल अहमद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(31) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल फ़ज़्लिल्लाहि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(32) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलस्सय्यिदिश्शाह बरकतिल्लाहि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(33) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल अलि मुहम्मदिन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(34) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलस्सय्यिदि अश्शाह हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(35) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि

व अ़लैहिम व अ़लल मौलस्सय्यिदि अश्शाह अबिल फ़ज़्लि शम्सिल मिल्लति वद्दीनि आलि अहमद अच्छे मियां रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(36) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौला सय्यिदिल करीमिश्शाह आलि रसूलिल अहमदी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(37) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलल करीमि सिराजिस्सालिकीन नरिल आ़रिफ़ीन सय्यिदी अबिल हसन अहमदिन्नूरिय्यिल मारहरवी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(38) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल मौलल हुमामि इमामि अहल्सिसुन्नति मुजद्दिदिश्शरी अ़तिल आ़तिरति मुअय्यिदिल मिल्लतित्ताहिरह हज़रतिश्शैख़ि अहमद रज़ा ख़ान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(39) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम जमीअ़ंव वश्शैख़ि हुज्जतिल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(40) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम जमीअ़ंव वश्शैख़ ज़ुब्दतिल अतक़िया अलमुफ़्तियिल अअ़ज़मि बिलहिन्द मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान अलक़ादिरि। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

(41) अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम जमीअंव व अ़ला अ़ब्दिकल फ़क़ीर मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अलअज़्हरी अलक़ादिरि ग़ुफ़र लहु व लिवालिदैहि अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम व अ़लल फ़क़ीर --- ग़ुफ़िरा लहु अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अ़लैहि व अ़लैहिम जमीअ़ंव व अ़ला साइरि औलियाइका व अ़लैना, व बिहिम व लहुम व फ़ीहिम व मअ़हुम या अरहमर्राहिमीन आमीन!

उर्दू शजर ए रज़विया:- महफ़िले अंजुम में अख़्तर दूसरा मिलता नहीं।

शज़र ए क़ादरिया बरकातिया, रज़विया जो पूरी दुनिया में मशहूर है और जिसे दुआ़ओं के वक़्त तबर्रूक के तौर पर पढ़ा जाता है, कुछ यूं है:

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजिए ख़ुदा के वास्ते
मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलाएं रद्द, शहीदे कर्बला के वास्ते
सय्यिदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख हमें
इल्मे हक़ दे बाक़रे इल्मे हुदा के वास्ते
सिदक़ सादिक़ का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते
बहरे मअ़रुफ़ व सिर्री मअ़रुफ दे बे-ख़ुद सरी
जुंदे हक़ में गिन जुनैदे बा सफा के वास्ते
बहरे शिब्ली शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अ़ब्दे वाहिद बे रिया के वास्ते
बुल फरह का सदक़ा कर ग़म को फ़रह
दे हुस्न व सअ़द बुल हसन और बू सईद सअ़द ज़ा के वास्ते
क़ादरी कर क़ादरी रख क़ादरियों में उठा
क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिर क़ुदरत नुमा के वास्ते
अहसनल्लाहु लहु रिज़्क़न से दे रिज़्के़ हसन
बंद ए रज़्ज़ाक़ ताजुल अस्फिया के वास्ते
नसराबी सालेह का सदक़ा सालेह व मंसूर रख
दे हयाते दीं मुहिय्ये जान फ़िज़ा के वास्ते
बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते
ख़ान ए दिल को ज़िया दे, रुए ईमां को जमाल
शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते
दे मुहम्मद के लिए रोज़ी कर अहमद के लिए
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते
दीन व दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्क़े हक़ दे इश्क़ी ए इश्क इंतिमा के वास्ते
हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिए
कर शहीदे इश्क़ हम्ज़ा पेशवा के वास्ते

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुल उला के वास्ते
दो जहाँ में ख़ादिमे आले रसूलल्लाह कर
हज़रत आले रसूले मुक्तदा के वास्ते
नूरे जां व नूरे ईमां नूरे क़ब्र व हश्र दे
बुल हुसैने अहमद नूरी लिक़ा के वास्ते
कर अ़ता अहमद रज़ा ए अहमदे मुर्सल मुझे
मेरे आक़ा हज़रत अहमद रज़ा के वास्ते
हामिद व महमूद और हम्माद अहमद कर मुझे
मेरे मौला हज़रत हामिद रज़ा के वास्ते
साया ए जुम्ला मशाइख़ या ख़ुदा हम पर रहे
रहम फ़रमा आले रहमां मुस्तफ़ा के वास्ते
बहरे जीलानी मियां जो परतवे फ़ारुक़ थे
इम्तियाज़े हक़ व बातिल दे गदा के वास्ते
ऐ ख़ुदा अख़्तर रज़ा को चर्ख़ पर इस्लाम के रख
दरख़्शां हर घड़ी अपनी रज़ा के वास्ते
सदक़ा इन अअ़यां का दे छः अ़ैन
इज़्ज़ो इल्मो अ़मल अ़फ़्व इरफ़ां, आ़फ़ियत इस बे नवा के वास्ते

सिलसिले की फ़ातिहा ख़्वानीः- यह शजर ए मुबारका हर रोज़ बादे नमाज़े सुबह एक बार पढ़ लिया करें, उसके बाद दुरुदे ग़ौसिया सात बार, अल-हम्दु शरीफ़ एक बार, आयतुल कुर्सी एक बार, कुल हुवल्लाह शरीफ़ सात बार और दुरुदे ग़ौसिया तीन बार पढ़ कर इसका सवाब इन तमाम मशाइख़े किराम की अरवाहे तय्यिबात को नज़्र करें, इससे उन तमाम मशाइख़ का फ़ैज़ हासिल होगा। यह काम उस शख़्सियत के वास्ते से होगा जिसके हाथ पर बंदा बैअ़त है। अगर शेख़ ज़िंदा है तो उनके लिए आ़फ़ियत और सलामती की दुआ़ करें वरना उनका नाम भी फ़ातिहा में शामिल कर लें।

दुरुदे ग़ौसियाः- अल्लाहम्मा सल्लि अ़ला सय्यिदना व मौलाना मुहम्मदिन मअ़दिनिल जूदि वल करम व आलिही व बारिक व सल्लिम।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अ़रब... शेष पृष्ठ 27 का

मियाँ ने दरख़्वास्त को हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की बारगाह में पेश किया और हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से ने नाचीज को ख़िलाफ़त व इजाज़त से नवाज़ा।

इस रात इशा की नमाज़ हम लोगों ने हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के काशाना पर ही अदा की। आपने भी जमाअ़त के साथ नमाज़े इशा अदा फ़रमाई। जब अ़ल्लामा अ़सजद मियाँ जमाअत से नमाज़ पढ़ाने के लिये तशरीफ़ लाए तो हम ने यह अ़जीब मंज़र देखा कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने जमाअत खड़ी होने से पहले अ़ल्लामा अ़सजद मियाँ के चेहरे पर हाथ फेरा, ऐसा लग रहा था जैसे आप इतमीनाने क़ल्ब के लिए ऐसा कर रहे हों।

जमाअ़त के बाद हम लोग सुन्नतों और नफ़्लों में मशग़ूल हो गए जबकि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़, अ़ल्लामा अ़सजद मियाँ की इक़तिदा में नवाफ़िल भी जमाअ़त के साथ पढ़ रहे थे। मैं ने इसकी अस्लियत जानने के लिए जब अज़हरी गेस्ट हाउस में हुज़ूर मोहद्दिसे कबीर से पूछा तो आपने फ़रमायाः तदाई के साथ नफ़्ल नहीं पढ़ रहे हैं यानी नफ़्ल की जमाअ़त तदाई के साथ नाजाइज है और तदाई कि मिक़दार तीन से ज़्यादा है और यहाँ तीन से कम थे। आपने मज़ीद फ़रमायाः अगर तुम लोग ना होते तो मैं भी जमाअ़त में हो जाता और बग़ैर तदाई के नफ़्ल की जमाअ़त जाइज है।

दर अस्ल यह हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का तक़वा था क्योंकि आप उस उम्र में थे जिसमें तलफ़्फ़ुज़ पर पूरी तरह क़ुदरत नहीं रहती। अगरचे इस हालत में भी इंफ़िरादी नमाज़ हो जाती है। मगर चूँकि इमाम की क़िराअत, मुक़्तदी की क़िराअत होती है, इस लिए आप चाहते थे कि आपके नवाफ़िल में भी क़िराअत तलफ़्फ़ुज़ और मख़ारिज के साथ अदा हो।

विसाले पुर मलालः- अफ़सोस कि इल्म व फ़ज़्ल का यह आफ़ताब 6 ज़िल क़ादा 1438 मुताबिक़ 20 जुलाई 2018 बरोज़ जुमा इस दुनिया से हमेशा के लिए ग़ुरूब हो गया।

सिलसिला ए रज़विया के वज़ीफ़े और नसीहतें

-मौलाना प्यार मुहम्मद साहब
निगरां: सुन्नी तबलीगी जमाअत, बासनी

हर सिलसिले की तरह सिलसिला ए रज़विया में भी मुरीदों के लिए कुछ औराद व वज़ाइफ़ और नसीहतें हैं जिन्हें मुरीदों को मानना और अ़मल में लाना चाहिए।

पंज गंज क़ादरी:- सुबह बाद नमाज़े फ़ज्र, या अ़ज़ीज़ु या अल्लाह, बाद नमाज़े ज़ुहर, या करीमु या अल्लाह, अ़स्र बाद या जब्बारु या अल्लाह, बाद नमाज़े मग़रिब या सत्तारु या अल्लाह, इशा बाद या ग़फ़्फ़ारु या अल्लाह।

ये सब वज़ीफे 100 बार इस तरह पढ़ें कि अव्वल व आख़िर तीन-तीन बार दुरुद शरीफ़ पढ़ा जाए।

क़ज़ा ए हाजात के लिए:- (1) अल्लाहु रब्बी ला शरीक लहु 874 बार इस तरह पढ़ें कि अव्वल व आख़िर 11 बार दुरुद शरीफ़ पढ़ा जाए। जब यह पढ़ें बा वुज़ू, क़िबला रु हों और दो ज़ानू बैठ कर मुराद हासिल होने तक रोज़ाना पढ़ें। इस मुतअ़य्यन तादाद के अ़लावा उठते बैठते, चलते-फ़िरते, वुज़ू बे-वुज़ू हर हाल में बिना किसी शुमार के पढ़ते रहें।

(2) हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील: यह वज़ीफ़ा 450 बार रोज़ाना मुराद हासिल होने तक इस तरह पढ़ें कि अव्वल व आख़िर 11 बार दुरुद शरीफ़ पढ़ें। जिस वक़्त घबराहट हो इस कलिमे का बे शुमार विर्द करें।

(3) बाद नमाज़े इशा 111 बार ''तुफ़ैल हज़रत दस्तगीर दुशमन होवे ज़ेर'' अव्वल व आख़िर 11 बार दुरुद शरीफ़ पढ़ कर मुराद हासिल होने तक यह तीनों अ़मल मज़कूरा तरीक़े से करते रहें, ये मुजर्रब भी हैं सहलुल हुसल भी।

मुरीदों के लिए ज़रुरी हिदायात:- (1) मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त पर क़ाइम रहें, सुन्नियों के जितने मुख़ालिफ़ हैं जैसे वहाबी, देवबंदी, राफ़ज़ी, तबलीग़ी, मौदूदी, नदवी, नेचरी, ग़ैर मुक़ल्लिद और क़ादियानी वग़ैरह सबसे जुदा रहें और सब को अपना दुशमन और मुख़ालिफ़ जानें। उनकी बात ना सुनें, उनके पास ना बैठें, उनकी कोई तहरीर ना देखें क्योंकि शैतान को मआ़ज़ल्लाह दिल में वस्वसा डालते कुछ देर नहीं लगती। आदमी को जहाँ माल या आबरु का अंदेशा होगा, हरगिज़ ना जाएगा। दीन व ईमान सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ चीज़ हैं। उनकी हिफ़ाज़त में हद से ज़्यादा कोशिश फ़र्ज़ है। माल और दुनिया की इज़्ज़त, दुनिया की ज़िंदगी, दुनिया की हद तक है। दीन व ईमान से हमेशगी के घर में काम पड़ना है और उनकी फ़िक्र सबसे ज़्यादा लाज़िम है।

(2) नमाज़े पंजगाना की पाबंदी निहायत ज़रुरी है। मर्दों को मस्जिद और जमाअ़त का इल्तिज़ाम भी वाजिब है। बे-नमाज़ी मुसलमान गोया तस्वीर (फ़ोटो) का आदमी है जो ज़ाहिरी सूरत में इंसान है मगर इंसान का काम कुछ नहीं। बे-नमाज़ी वही नहीं जो कभी ना पढ़े बल्कि जो एक वक़्त की भी जान-बूझ कर छोड़ दे, बे-नमाज़ी है। नोकरी, मुलाज़मत, तिजारत वग़ैरह किसी हाजत के सबब नमाज़ क़ज़ा कर देना सख़्त ना शुक्री और इंतिहाई दर्जे की नादानी है। कोई आक़ा यहाँ तक कि काफ़िर का भी अगर कोई नोकर हो, अपने मुलाज़िम को नमाज़ से बाज़ नहीं रख सकता है, अगर मना करे तो ऐसी नोकरी हरामे क़तई है और कोई वसीला ए रिज़्क़ नमाज़ खो कर बरकत नहीं ला सकता। रिज़्क़ तो उसके हाथ में है जिसने नमाज़ फर्ज़ की है और उसके छोड़ने पर ग़ज़ब फ़रमाता है।

(3) जितनी नमाज़ें क़ज़ा हो गई हैं, सब का ऐसा हिसाब लगाऐं कि अंदाज़े में बाक़ी ना रह जाए ज़्यादा हो जाऐं तो हरज नहीं और सब ताक़त भर रफ़्ता-रफ़्ता निहायत जल्द अदा कर लें, काहिली ना करें क्योंकि मौत का वक़्त मालूम नहीं और जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मा पर बाक़ी होता है, कोई नफ़्ल क़ुबूल नहीं किया जाता, क़ज़ा नमाज़ें जब कई एक हो जाऐं जैसे 100 बार की फ़ज्र क़ज़ा है तो हर बार यूं निय्यत करें कि निय्यत की मैं ने उस नमाज़े फ़ज्र की जो सबसे पहले मुझ से क़ज़ा हुई यानी जब एक अदा हुई तो बाक़ियों में जो सबसे पहली है। इसी तरह ज़ोहर वग़ैरह हर नमाज़ में निय्यत करें, क़ज़ा में फ़क़त फ़र्ज़ और वित्र यानी हर दिन और रात की बीस रकअ़तें अदा की जाती हैं।

(4) जितने रोज़े भी क़ज़ा हुए हों, दूसरा रमज़ान आने से पहले अदा कर लिए जाऐं क्योंकि हदीस शरीफ़ में है जब तक पिछले रमज़ान के रोज़ों की क़ज़ा ना कर ली जाए, अगले रोज़े क़ुबूल नहीं होते।

(5) जो साहिबे माल हैं, ज़कात भी दें, जितने बरसों की ना दी हो, फ़ौरन हिसाब कर के अदा करें, हर साल की ज़कात साल पूरा होने से पहले दे दिया करें। साल पूरा होने के बाद देर करना गुनाह है। लिहाज़ा शुरु साल से रफ़्ता-रफ़्ता देते रहें, साल पूरा होने पर हिसाब करें, अगर पूरी अदा हो गई तो बेहतर, वरना जितनी बाक़ी फ़ौरन दे दें और कुछ ज़्यादा निकल गया है तो वह आइंदा साल में मुजरा कर लें। अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ला किसी का नेक अ़मल ज़ाया नहीं करता।

(6) साहिबे इस्तिताअ़त पर हज फ़र्ज़े आ़ज़म है अल्लाह तआ़ला ने उसकी फ़र्ज़ियत बयान कर के फ़रमाया: और जो कुफ़्र करे तो अल्लाह तआ़ला सारे जहाँ से बे-परवाह है, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज छोड़ने वाले को फ़रमाया: चाहे यहूदी हो कर मरे या नसरानी हो कर।

(7) झूट, बे-हयाई, चुग़ली, ग़ीबत, ज़िना, लिवात़त, ज़ुल्म, ख़यानत, दिखावा, घमंड, दाढ़ी मुंडाने या कतरवाने, फ़ासिक़ों का पहनावा पहनने और हर बुरी ख़सलत से बचें। जो इन सातों बातों पर अ़मल करेगा, अल्लाह व रसूल के वादे से उसके लिए जन्नत है, जल्ला जलालहु व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिही व अस्हाबिही वसल्लिम आमीन।

सूरह वाक़िआ़, सूरह यासीन और सूरह मुल्क याद कर लें और ये तीनों सूरतें बिला नाग़ा हर रात सोते वक़्त पढ़ लिया करें। जब तक ये हिफ़्ज़ याद ना हों, क़ुरआने अ़ज़ीम से देख कर पढ़ें। ये सब पढ़ने के बाद फिर कोई बात ना करें, चुप-चाप सो जाऐं और रात में कोई ज़रुरी बात करना हो तो पहले ही बात कर लें। इसी तरह एक बार सूरह काफ़िरुन की तिलावत कर लें। इंशा अल्लाहु तआ़ला इस वज़ीफ़े से बलाओं से महफ़ूज़ रहेंगे, दुशमन दफ़ा होंगे, मुरादें हासिल होंगी, रिज़्क़े हलाल में कुशादगी पैदा होगी, फाक़ा की मुसीबत से महफ़ूज़ रहेंगे और ख़ुदा नसीब फ़रमाए तो दौलते बैदार, दीदारे फ़ैज़ आसार सरकार हुज़ूर सय्यदुल अबरार सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से इंशा अल्लाहु तआ़ला मुस्तफ़ीज़ होंगे।

इसके उख़रवी फ़ाइदों में से यह भी है कि इंशा अल्लाहु तआ़ला ईमान पर ख़ात्मा होगा। अ़ज़ाबे से बचे रहेंगे। मगर इन सबके लिए यह ज़रूरी है कि तिलावत उस सही ढ़ंग से हो जो क़ुरआन मजीद पढ़ने का हक़ है।

वैसे भी जो क़ुरआने अ़ज़ीम सही ना पढ़ता हो, उस पर फर्ज़ है कि सही पढ़ना सीखे, हर-हर हर्फ़ को उसके सही मख़रज और सिफ़त के साथ अदा करे।

याद दहानी:- ऐ अ़ज़ीज़ याद रख! तेरी पैदाईश के वक़्त सब हंस रहे थे और तू रो रहा था। ऐसा जीना जी कि तेरी मौत के वक़्त सब रो रहे हों और तू हंस रहा हो।

अगर इख़लास से यादे इलाही में आ़जिज़ी और ज़ारी करता रहे, महबूब के फ़िराक़ में दिल तपां, सीना बिरयां और आँखें रवां रहे तो ज़रुर-ज़रुर वक्ते इंतिक़ाल विसाल पाकर तू ख़ुश होगा और तेरे फ़िराक़ पर मख़लूक़ रो रही होगी।

ऐ अ़ज़ीज़! तू ने अ़हद किया है कि तू मज़हबे अहले सुन्नत पर क़ाइम रहेगा और हर बद मज़हब की सोहबत से बचता रहेगा, इस पर सख़्ती से क़ाइम रहना। और यह भी याद रखना कि तू ने अ़हद किया है: तू नमाज़, रोज़े, हर फ़र्ज़, हर वाजिब को उनके वक़्तों पर अदा करता रहेगा और गुनाहों से बचता रहेगा, खुदा करे तू अपने अ़हद पर क़ाइम रहे।

याद रखना अ़हद तोड़ना हराम, सख़्त ऐब और निहायत बुरा काम है। वादा वफ़ा करना लाज़िम है अगरचे किसी अदना से अदना मख़लूक़ से किया हो, जबकि यह अ़हद तो तू ने ख़ालिक़ व मालिक जल्ला व अ़ला से किए हैं।

ऐ अ़ज़ीज़! मौत को याद रख! अगर मौत को याद रखेगा तो इंशा अल्लाहु तआ़ला हिलाकत से बचा रहेगा, दीन व ईमान सलामत ले जाएगा और शरीअ़त की पैरवी करता रहेगा और गुनाहों से बचता रहेगा।

ऐ अ़ज़ीज़! आज जाग ले कि मौत के बाद सुख़, चैन, इममीनान, आराम की नींद सोता रहेगा, फरिश्ता तुझ से कहेगा वैसे सो जा जैसे दुलहन सोती है। सुन, सुन, सुन! जागना है जाग ले अफ़लाक के साये तले। हश्र तक सोना पड़ेगा ख़ाक के साये तले।

ऐ अज़ीज़! दुनिया पर मत इतरा, दुनिया पर इतराने वाला, ख़ुदा से ग़ाफिल हो जाता है क्योंकि दुनिया ख़ुदा से ग़फ़लत ही का नाम है।

पर्दे की अहमियतः-औ़रतें पर्दा को फ़र्ज़ जानें, हर ग़ैर मेहरम से पर्दा फ़र्ज़ है। ना बे पर्दा फ़िरें, ना बे पर्दा घर में रहें। बारीक कपड़े जिन से बाल या बदन चमके, पहन कर, या पाइंचों से ऊपर का हिस्सा या पांव के टख़्ने के ऊपर पिंडली का हिस्सा और गला, सीना खोल कर या बारीक कपड़ों से नुमायां होने की हालत में केवल ग़ैर ही नहीं जेठ, देवर, बहनोई ही नहीं अपने सगे चचा ज़ाद, ख़ाला ज़ाद, फ़ूफ़ी ज़ाद भाई के सामने होना भी हराम है, बद अंजाम है।

मर्दों पर फ़र्ज़ है कि अपनी बीवियों, बेटियों, बहनों वग़ैरह महारिम को बे पर्दगी से बचाऐं, पर्दे की ताकीद करें और हुक्म ना मानने पर जिन्हें सज़ा दे सकते हैं, सज़ा दें, जो मर्द अपने महारिम की बे पर्दगी की परवाह ना करेगा, ग़ैर मेहरमों के सामने फ़िराएगा, ख़ुसूसन इस तरह की बे पर्दगी के साथ कि कुछ आ़ज़ा की भी बे पर्दा हों तो वह मर्द मआ़ज़ल्लाह दय्यूस ठहरेगा।

मोहब्बत और इख़्लास शर्त है, पीर की मोहब्बत दर अस्ल रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से मोहब्बत है और रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मोहब्बत ख़ुदा की मोहब्बत है। मोहब्बत जितनी ज़्यादा होगी और अ़क़ीदत जितनी पुख़्ता होगी, उतना ज़्यादा फ़ाइदा होगा, अगरचे पीर बाकमाल ना हो, मगर पीर सही हो जिसमें पीरी की शर्तें पाई जाती हों तो सरकारे फ़ैज़ से ज़रुर फैज़ मिलेगा।

जैसे ख़ुदा एक है, नबी एक हैं, वैसे ही पीर भी एक होना चाहिए जो तमाम तर तवज्जुहात का क़िबला हो क्योंकि जैसे परेशान नज़र, परेशान दिल होता है कि धोबी का कुत्ता ना घर का ना घाट का, वैसे ही दीन व दुनिया के हर काम में इख़लास ज़रूरी है। इसी तरह शरीअ़त की पैरवी, क़दम क़दम पर उसका ख़याल, खाना, पीना, उठना, बैठना, लेटना, सोना, जागना, जाना, आना, कहना, सुनना, लेना, देना, कमाना, ख़र्च करना वग़ैरह हर काम में उसका पूरा ख़याल करना लाज़िम है।

ऐ रज़वी! फ़ना फ़िर्रज़ा हो कर सरापा रज़ा ए इलाही और रज़ा ए अहमदी हो जा। तेरा मक़सूद बस तेरा मअ़बूद हो, उसकी रज़ा ही तेरा मतलूब हो। दिखावा से बचने की कोशिश करते रहना और हर काम इख़लास से ख़ुदा की रज़ा के लिए शरीअ़त की पैरवी में करना, यह बड़ी सआ़दत, अ़ज़ीम मुजाहदा और इंतिहाई रियाज़त है।

हमारे कुछ मशाइख़ का इरशाद है: लोग रियाज़तों की हवस करते हैं जबकि कोई रियाज़त और मुजाहदा अरकान व आदाब नमाज़ की रिआ़यत करने के बराबर नहीं। ख़ुसूसन जब तक कोई शरई उज़्र ना हो, पाँचों वक़्त मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना।

क़ुरआ़ने करीम की तिलावत करते रहना। औलिया ए कामिलीन का इरशाद है: बेशक तिलावते क़ुरआन तमाम हाजतों के लिए काफ़ी है। जितना हो सके, रोज़ाना अदब के साथ पढ़ता रहे। अगर इस तरह पढ़े कि जुमा से शरु करे और जुमेरात को ख़त्म कर दे तो बहुत बेहतर, इससे इंशा अल्लाहु तआ़ला जल्द कामयाब होगा।

ख़त्मे क़ुरआन का तरीक़ा:-जुमा के दिन सूरह फ़ातिहा से सूरह माइदा तक, सनीचर को सूरह अनआ़म से सूरह तौबा तक, इतवार को सूरह यूनुस से सूरह सॉद तक, बुध को सूरह ज़ुमर से सूरह रहमान तक और जुमेरात को सूरह वाक़िआ़ से आख़िर क़ुरआन तक ख़लवत में पढ़ें। बीच में बात ना करें और हर अहम से अहम काम के लिए मुसलसल 12 ख़त्मे क़ुरआन को इक्सीरे आ़ज़म यक़ीन करें।

दुरुद शरीफ़के फ़ज़ाइल व बरकात बे शुमार हदीसों आए हैं। एक हदीस में है: हज़रत उबै बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं: मैं ने नबी ए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया: हुज़ूर मैं आप पर ख़ूब दुरुद भेजना चाहता हूँ, इसके लिए कितना वक़्त मुक़र्रर करुँ? आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जितना चाहो, हां! अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैं ने अर्ज़ किया: आधा वक़्त? फ़रमाया: तुम्हें इख़्तियार है। हां! अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैं ने अर्ज़ किया: दो तिहाई वक़्त। फ़रमाया: तुम्हें इख़्तियार है। हां! अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैं ने अर्ज़ किया: तमाम वक़्त। हुज़ूर रहमते आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरषाद फ़रमाया: अगर ऐसा करो तो तुम्हारे लिए तमाम मक़ासिद (दीनी और दुनियावी) पूरे होंगे और तमाम गुनाह (ज़ाहिरी और बातिनी) मिटा दिए जायेंगे।

पढ़ने का तरीक़ा:- मुरीदों को इख़्तियार है कि वो इन औराद व वज़ाइफ़ मुक़र्ररा वक़्त पर पढ़ा करें या सिर्फ़ दुरुद शरीफ़ कलिम ए तय्यिबा, तिलावते क़ुरआन और तसव्वुरे शैख़ में मशगूल रहे। इंशा अल्लाहु तआ़ला अ़ज़ीम फ़ाइदे ज़ाहिर होंगे।

तसव्वुरे शेख़ के लिए ख़लवत में आवाज़ों से दूर हो कर शैख़ के मकान और विसाल हो गया तो जिस तरफ़ मज़ार हो, उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हो कर बैठे। बिलकुल ख़ामोश, बा अदब, पूरे ख़ुशू के साथ और शैख़ की सूरत का तसव्वुर करे और अपने आपको उनकी बारगाह में हाज़िर जाने और यह ख़याल दिल में जमाए कि सरकारे रिसालत सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से फ़ुयूज़े अनवार शैख़ के दिल पर फ़ाइज़ हो रहे हैं और मेरा दिल शैख़ के नीचे दरयोज़ा गरी में लगा हुआ है। षैख़ के दिल से अनवार व फ़ुयूज़ उबल-उबल कर मेरे दिल में आ रहे हैं। इस तसव्वुर को बढ़ाते रहें यहाँ तक कि तकल्लुफ़ की हाजत ना रहे। इसकी इंतिहा यह होगी शैख़ की सूरत ख़ुद मुरीद के साथ रहेगी और हर काम में मदद करेगी और इस राह में जो मुश्किल उसे पेश आएगी, उसका हल बताएगी।

ताजुश्शरीआ की मक़्बूलियत का राज़

-मुफ्ती अज़हार अहमद अमजदी अज़हरी
मर्कज़ तर्बियते इफ़्ता, ओझागंज, बस्ती

वारिसे उलूम आला हज़रत, जानशीने मुफ़्ती आज़मे हिंद ताजुश्शरीआ हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा खां अज़हरी बरैलवी अलैहिर्रहमा की शख़्सियत मोहताज तआरुफ नहीं, आप की शख़्सियत आलमी शख़्सियत थी, यूं तो आप मुख़्तलिफ़ उलूम व फुनून में माहिर थे मगर इल्म फ़िक़ह और इल्मे हदीस में आपको महारत हासिल थी और आपकी नात गोई भी खूब है, सुनकर दिल व दिमाग़ पर अजीब व ग़रीब कैफ़ियत तारी हो जाती है। उलूम व फुनून में महारत तो कोई भी मेहनत और जद्दो जेहद करके हासिल कर सकता है, लेकिन इल्म के साथ अमल भी करना, हर घड़ी शरीअत का पास व लिहाज़ रखने की पूरी कोशिश करना, तक़वा व परहेज़गारी और तसल्लुब फिद्दीन को अपना तुर्रा इम्तेयाज़ बनाना (वग़ैरह) यह हर एक के हिस्सा में नहीं आता। यह उसी के हिस्से में आता है जिसे अल्लाह तआला अपना महबूब बनाता है और हज़रत ताजुश्शरीआ को अल्लाह तआला ने अपना महबूब बनाया है, क्योंकि आप की ज़िन्दगी में अवाम व ख़्वास का आपसे बे पनाह मुहब्बत करना फिर दारे फ़ानी से रुख़सत होने के बाद लाखों की तादाद में उलमाए किराम और अवाम का आपके जनाज़ा में शिरकत करना, अल्लाह तआला के नज़्दीक और फरिश्तों के झुरमुट में आप के महबूब होने की वाज़ेह व बय्यिन दलील है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है-

तर्जमा: बेशक वह जो ईमान लाये और अच्छे काम किये अनक़रीब उनके लिये रहमान मुहब्बत कर देगा।

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं-

तर्जमा: जब अल्लाह तआला बंदा को महबूब बनाता है, तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम को निदा दे कर फ़रमाता है, बेशक अल्लाह तआला फलां बंदा को पसंद करता है ऐ जिब्राईल! तुम भी इसे महबूब रखो तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम उसे महबूब रखते हैं, फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम आसमान वालों के दर्मियान यह ऐलान फ़रमाते हैं, बेशक अल्लाह तआला फलां बंदा को महबूब रखता है, तुम भी उसे महबूब रखो, तो आसमान वाले भी उसे महबूब रखते हैं। फिर उस फलां शख़्स को अहले ज़मीन के दर्मियान मक़बूलियत अता कर दी जाती है।

अल्लाह तआला के नज़्दीक महबूब होने ही का नतीजा है कि पूरी दुनिया अहले सुन्नत आपको जानती और मानती है, आपके दस्ते हक़ परस्त पर सैकड़ों लोग कुफ़्र के अंधेरे को छोड़कर इस्लाम की ताबनाक रौशनी में दाख़िल होते नज़र आये हज़ारों बे राह आपकी हकीमाना तबलीग़ से बे राह रवी को छोड़कर राहे वस्त इख़्तेयार करते हुए दिखाई दिये और लाखों की तादाद में अवाम व ख़्वास आपकी बैयत व इरादत में शामिल होकर खुशी व सआदत महसूस कर रहे हैं, किसी ने क्या ख़ूब

कहा है-

ईं सआदत बज़ोरे बाजू नीस्त

ता न बख़ूशद खुदाए बख़्शिंदा

एक हाकिम जब मुल्क फ़तह करता है तो उसके लिये कुव्वत और तरह तरह के हरबे इस्तेमाल करता है तब जाकर कहीं उसे मुल्क और क़ौम के असबाब पर राज करने का मौक़ा मिलता है, मगर कुरबान जाएं ताजुश्शरीआ की ज़ात पर जिन्होंने ताक़त व कुव्वत के ज़रिए नहीं बल्कि अपने किरदार, अख़लाक़, और हकीमाना ज़िन्दगी से मुल्क और लोगों के जिस्म पर नहीं बल्कि उनके दिलों पर राज किया। यूं उनके दिलों की फ़तह व नुसरत आपके हिस्सा में आईं किसी कहने वाले ने क्या खूब कहा है-

वह अदाए दिलबरी हो कि नवाए आशिक़ाना

जो दिलों को फ़तह कर ले वही फ़ातहे ज़माना

आप इल्म व हिकमत में भी यगाना ए रोज़गार थे, यही वजह है कि आप के रुशहाते क़लम से कई इल्मी व तहक़ीक़ी तसनीफ़ात वजूद में आईं, आप के इल्म व हिकमत और ख़िताब नायाब से सिर्फ़ कई सूबे, एक मुल्क हिंदुस्तान के लोग ही नहीं बल्कि अरब व अजम में कई मुल्क के लोग मुस्तफ़ीज़ हुए आपके इल्म तक़वा व परहेज़गारी और तसल्लुब फ़िद्दीन को उलमा ए अरब व अजम बल्कि उलमाए जामिया अज़हर, मिस्र ने भी निगाहे तहसीन से देखने के साथ आपकी इस खूबी को सराहा।

इन्हीं तमाम औसाफ़े हमीदा और बे-लौस कुरबानियों की वजह से जब आपके दारे फ़ानी से कूच करने की यह ख़बर 6 ज़ीक़ादा 39 मुताबिक़ 20 जुलाई 2018 सनीचर की रात बाद नमाज़े मग़रिब आलमे इस्लाम में हवा की तरह फैली तो अहले सुन्नत तो अहले सुन्नत ग़ैरों की भी आंखें अश्कबार हो गए, दिल इज़्तेराब का शिकार हो गये लोगों पर एक लम्हा के लिए सकता तारी हो गया। जब होश में आए तो पूरे आलमे इस्लाम से उलमा ए किराम और पीराने इज़ाम ताज़ियती खतूत भेजने लगे और मुख़्तलिफ़ ममालिक से अवाम व ख़्वास सभी लोग आपकी एक झलक देखने और आपके मुबारक जनाज़ा में शिरकत के लिए अपने मर्कज़ अक़ीदत बरैली शरीफ़ का रख़्ते सफ़र बांध लिया। देखते ही देखते बरेली शरीफ़ में सैलाब की तरह लाखों की तादाद में लोग जमा हो गए जिधर नज़र दौड़ाइये सिर्फ़ इंसानों के ही सर नज़र आ रहे थे। बिल आख़िर तमाम मुहिब्बीन व मुखलिसीन ने अपने दिलों पर पत्थर रखकर 8 ज़ीक़ादा 39 मुताबिक़ 22 जुलाई 2018 बरोज़ इतवार सुबह 11 बजे नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के बाद अपनी पुर नम आंखों से इस मर्दे मुजाहिद और मर्द क़लंदर को बरेली शरीफ़ की सरज़मीन पर अज़हरी गेस्ट हाउस में सिपुर्दे ख़ाक किया।

अब्रे रहमत उनकी मरक़द पर गोहर बारी

हश्र तक शाने करीमी नाज़ बरदारी करे

सफ़ीना ए बख़्शिशः एक क़ीमती अदबी दस्तावेज़

-मौलाना तुफ़ैल अहमद मिस्बाही
सब ऐडीटरः माहनामा अशरफ़िया, मुबारकपुर, आज़मगढ़, यूपी

हज़रत ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा की शाइरी और ''सफ़ीन ए बख़्शिश'' पर गुफ़्तगू करने से पहले यह इक़्तिबास मुलाहज़ा करें ताकि कारईन को अस्ल मौज़ू के समझने में आसानी हो। ''सवानेह ताजुश्शरीआ़'' के मुसन्निफ़ मौलाना यूनुस रज़ा मूनिस उवैसी लिखते हैं:

हज़रत ताजुश्शरीआ़ को शेअ़र व शाइरी से भरपूर मुनासबत है, वह एक फित्री शाइर हैं। उर्दू, अ़रबी और फ़ारसी में एक समान महारत के साथ शाइरी करते हैं। आपका अ़रबी कलाम सुनकर अहले अ़रब भी हैरान रह जाते हैं। हज़रत की हयात के मुतालआ़ से यह हक़ीक़त उजागर होती है कि उनकी ज़िंदगी के ख़ज़ाने में वो तमाम जवाहिर पाए जाते हैं, जो एक कामयाब शाइर और ख़ास तौर ''नातगो शाइर'' के लिए ज़रूरी हैं। उनकी नातिया शाइरी, दिल-कशी और रअ़नाई से लबरेज़ और दिल व दिमाग़ को दंग करने वाली शाइरी है। आपके कलाम में इश्क़ व वारफ़्तगी का एक हसीन गुलदस्ता है जिसमें ख़ुलूस की ख़ुशबू, अ़क़ीदत की रोशनी, ईमान की लज़्ज़त व हलावत और बयान की नफ़ासत व पाकीज़गी पूरे कमाल के साथ मौजूद हैं। (सवानेह ताजुश्शरीआ़, सफ़ाः 91-92,मतबूआ़, बरेली शरीफ़)

हज़रत ताजुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा को शेअ़र व सुख़न की दौलत वरासत में मिली थी। आप शाइराना ज़हन व दिमाग़ लेकर दुनिया में आए थे। आपकी शाइरी, कसबी नहीं बल्कि वहबी थी। यही वजह है कि इस फ़न में आपने किसी उस्ताज़ शाइर से बा-ज़ाबता इस्लाह लिए बग़ैर बड़ी कामयाब शाइरी की है। आपकी शाइरी को देख कर बड़े-बड़े क़ादिरूल कलाम शाइर भी रश्क़ करते नज़र आते हैं और इस बात की गवाही देते हैं कि ताजुश्शरीआ़ वाक़ई एक अ़ज़ीम और क़ादिरूल कलाम शाइर थे।

सफ़ीन ए बख़्शिश दर अस्ल हज़रत ताजुश्शरीआ़ के इल्मी कमाल, अदबी जमाल, फ़न्नी जाह व जलाल,शेअ़री महारत व उबाल और उनके निगार खाना ए अफ़कार का एक खूबसूरत और दिल-आवेज़ मजमूआ़ है, जिसमें ईमान व अ़क़ीदा की हरारत, इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की हलावत, सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते बा-बरकात से वालिहाना अ़क़ीदत और शियुफ़्तगी के साथ अदब की चाशनी वाफ़िर मिक़दार में पाई जाती है। यह मजमूआ़ शेअ़र व अदब के ज़ख़ीरे में एक क़ीमती इज़ाफा है।

अदब को ज़िंदगी की तस्वीर कहा गया है और अदब की बुनियाद हक़ीक़त निगारी पर रखी गई है। शाइरी, अदब की निहायत मशहूर और हर दिल अ़ज़ीज़ क़िस्म है, जिसमें क़ारिईन को ज़िंदगी का आईना दिखाने के साथ सच्चाई और हक़ीक़त निगारी पर काफ़ी ज़ोर दिया जाता है और वही नज़्म व नस्र एक कामयाब अदब कहलाने का मुस्तहिक़ ठहरती है, जिसमें सादगी के साथ, हक़ीक़त बयानी शामिल हो।

नातें और मनक़बतें लिखने वाले शाइरों ने भी शाइरी की ज़बान में ज़िंदगी के साथ बंदगी की तस्वीर पेश करने की कोशिश की है। इस तनाज़ुर में जब हम ''सफ़ीन ए बख़्शिश'' का मुतालआ़ करते हैं तो यह नातिया मजमूआ़ एक क़ीमती अदबी मजमूआ़ नज़र आता है, जिसमें ज़बान व बयान की तमाम-तर ख़ूबियां पाए जाने के साथ ज़िंदगी और बंदगी की झिलमिलाती तस्वीर वाज़ेह तौर पर दिखाई देती है।

ये अशआ़र मुलाहज़ा करें और देखें कि इन अशआ़र में सच्चाई और ज़िंदगी व बंदगी की तस्वीर कशी किस क़द्र वालिहाना अंदाज़ में की गई है:

ज़िंदगी यह नहीं है किसी के लिए।
ज़िंदगी है नबी की, नबी के लिए
ना समझ मरते हैं ज़िंदगी के लिए।
जीना, मरना है सब कुछ नबी के लिए
तेरी जाँ-बख़्शी के सदक़े ऐ मसीह ए जमाल!
संगरेज़ो ने पढ़ा कलिमा तेरा जाने जमाल
गर्मी ए महशर गुनहगारो! है बस कुछ देर की
अब्र बन कर छाऐंगे गेसू ए सुलताने जमाल

मौजूदा दौर की तस्वीर कशी करते हुए हक़ीक़त पर मबनी ये तीन शेअ़र देखें:

ग़ैर अपने हो गए, जो हमारे बदल गए
नज़रें बदल गईं तो नज़ारे बदल गए
इस दौरे मस्लिहत में वफ़ा कोई शैय नहीं
गाहे हुए हमारे तो गाहे बदल गए
किस को सुनाइएगा यहां ग़म की दास्ताँ
जो ग़म में साथ देते, वो सारे बदल गए

हर शेअ़र और कलाम में कोई ना कोई अदबी खुसूसियत और फ़न की लताफ़त ज़रूर पाई जाती है। ज़बान व बयान की चाशनी,बलंद ख़याली, रंगेतग़ज़्ज़ुल, खूबसूरत अलफ़ाज़ का इंतिख़ाब, दिलकश तरकीबें, रवानी और सादगी, ये सब इस क़ीमती नातिया मजमूआ़ की नुमायां खुसूसियात में से हैं। चंद मिसालें मुलाहज़ा फ़रमाऐं, सबसे पहले बलंद ख़याली की मिसाल देखें:

तेरा ज़र्रा वह है जिसने खिलाए अन-गिनत तारे
तेरा क़तरा वह है जिससे मिला धारा समुंद्र का
झुके ना बारेसद एहसाँ से क्यों बिनाए फ़लक
तुम्हारे ज़र्रे के परतव सितारहा ए फ़लक
यह ख़ाके कूच ए जानां है जिसके कूचे से
ना जाने कब से तरसते हैं दीदहा ए फ़लक
क़दम से उनके सरेअ़र्श बिजलियां चमकीं
कभी थे बंद, कभी वा थे दीदहा ए फ़लक

हदीस पाक का मफ़हूम है: कोई भी उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मुझे माँ-बाप, औलाद और दुनिया के तमाम इंसानों से ज़्यादा महबूब ना बनाले।

आपके कलाम में इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लमकी चांदनी हर जगह अपना नूर बिखेरती नज़र आती है। बिल-फ़र्ज़ अगर आपके कलाम में कोई ज़ाहिरी और मअ़नवी ख़ूबी ना भी होती तो जज़्बात की यही शिद्दत और इश्क़ व अ़क़ीदत की यही मिठास आपके कलामे बलाग़त निज़ाम को दुनिया ए इश्क़े हक़ीक़ी में एक शहकार और ला-फ़ानी कलाम के तौर पर मुतआ़रफ़ कराने के लिए काफ़ी होती।

नमूने पर के तौर पर इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से लबरेज चंद अशआ़र पेश हैं। ये अशआ़र देखें और लुत्फ़ लें।

सोया नहीं हूँ रात-भर इश्क़े हुज़ूर में
कैसा यह रत-जगा रहा कैफ़ व सुरूर में
दूर ए दिल रहे मदीने से मौत बेहतर है ऐसे जीने से
नबी से जो हो बेगाना, उसे दिल से जुदा कर दें
पिदर, मादर, बिरादर, माल व जान उन पर फ़िदा कर दें
दाग़ फ़ुर्क़ते तैबा क़ल्बे मुज़महिल जाता
काश गुंबदे ख़ज़रा देखने को मिल जाता
मेरादम निकल जाता उनके आस्ताने पर
उनके आस्ताने की ख़ाक में, मैं मिल जाता
तजस्सुस करवटें क्यों ले रहा है क़ल्बेमुज़तर में
मदीना सामने है बस अभी पहुँचा मैं दम-भर में
जो पाऊँ बोसा ए पाए हुज़ूर क्या कहना
मैं ज़रा, शम्स व क़मर का जवाब हो जाऊं

खुलास ए कलाम यह है कि ''सफ़ीन ए बख़्शिश'' फ़न्नी ऐतिबार से एक क़ीमती अदबी और शेअ़री मजमूआ़। अल्लाह तबारक व तआ़ला हज़रत ताजुश्शरीआ़ के मर्क़द परता सुबहे क़यामत अपने अनवार व तजल्लियात की बारिश नाज़िल फ़रमाए और उनके इल्मी, रुहानी और अदबी फुयूज़ व बरकात से हम ग़ुलामों को माला-माल फ़रमाए।

कल ना रोना कि अख़्तर मियां चल दिए

-मुफ़्ती मुतीउर्रहमान रज़्वी पूरनवी
जामिआ नूरिया शामपुर, रायगंज, जूनागढ़, गुजरात

इस वक्त जब हज़रत ताजुश्शरीआ़ हमारे दरमयान नहीं, उनकी रूह आ़ला इल्लीय्यीन में इमाम अहमद रज़ा हुज्जतुल इस्लाम और मुफ़्ती ए आज़म की रूहों से हमकिनार हो गई और उनका जिस्मे उनसुरी अपने इन अजदाद के साथ मदफ़ून हो चुका। क़लम तो क़लम, दिल व दिमाग़ भी साथ नहीं दे रहे हैं कि उनकी यादों के बिखरे हुए जवाहिरात को हाफ़िज़े के निहां ख़ाना से निकालकर काग़ज़ के सिपुर्द करूं। इस लिए ब-ज़ाहिर कुछ ग़ैर मरबूत शज़रात ही इमला कराने पर मजबूर हूँ। वैसे गहरी नज़र से देखने पर कुछ ना कुछ रब्त भी ज़रूर नज़र आएगा। हज़रत ताजुश्शरीआ़ का यह शेअ़र ज़ेहन की स्क्रीन पर बार-बार नमूदार हो रहा है।

देखने वालो! जी भर के देखो हमें,
कल ना रोना कि अख़्तर मियां चल दिये

शेअ़र के पहले मिस्रे पर तो सबने अ़मल किया, उनके ज़ाहिर को खूब देखा मगर अंदर झांकने की कोशिश बहुत कम लोगों ने की। वह क्या थे और कैसे थे? काश! उन पर हाशिया नशीनों के अपने ज़ाती मफ़ादात का हिजाब ना होता तो लोग बंद आंखों से ही नहीं, खुली आंखों से भी देख पाते कि वह इमाम अहमद रज़ा, हुज्जतुल इस्लाम और हज़रत मुफ़्ती ए आज़म की इल्मी और रूहानी अमानतों के कैसे अ़ज़ीम वारिस व अमीन थे।

(1) इस वक्त साल तो याद नहीं आ रहा है मगर अच्छी तरह याद है कि जब पहली बार केरला के जामिआ़ से शैख़ अबू बकर शाफ़ई से शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर शाफ़ई अ़लैहिर्रहमा बरेली शरीफ़ हाज़िर हुए और रज़ा मस्जिद में नमाज़ अदा की तो अपने मज़हब के मुताबिक़ रफ़ऐ यदैन किया तो बाहर आकर लोगों से पूछा: हज़रत अज़हरी साहब कहाँ तशरीफ़ रखते हैं? लोगों ने ग़ैर मुकल्लिद समझकर तवज्जो ही नहीं की लेकिन एक बारह तेरह साला तालिबे इल्म हज़रत अज़हरी साहब के दौलते कदे की बालाई मंज़िल पर क़ाइम अज़हरी दारुल इफ़्ता में आया, यहाँ उस वक्त हज़रत अ़लैहिर्रहमा, मौलाना यासीन अख़्तर मिस्बाही और यह फ़क़ीर इल्मी मुज़ाकरे में मशगूल थे। आते ही उस तालिबे इल्म ने कहा: हज़रत दो ग़ैर मुक़ल्लिद आपसे मिलना चाहते हैं मना कर दूं? मैं ने उसे डांटने के से अंदाज़ में कहा, तुम इजाज़त लेने आए हो या हुक्म सुनाने? फिर हज़रत से अर्ज़ किया, हुज़ूर! वो ग़ैर मुक़ल्लिद नहीं, क़ादयानी हों, आप तो उनसे मिलने नहीं जा रहे हैं, वो मिलने आ रहे हैं, आने दें, हो सकता है कि खुदा उनको हिदायत दे दे। मिस्बाही साहब ने भी मेरी ताईद की और हज़रत ने उस तालिबे इल्म से फ़रमाया कि अच्छा आने दो।

इस पर वह लड़का वापस हो गया और सफ़ेद जुब्बे में मलबूस, सर पर मख़्सूस अंदाज़ के इमामे सजाए हुए दो शख़्स ज़ीने से बर आमद हुए और एक ही सांस में सलाम के साथ कहा: अस्सलामु अ़लैकुम! हम लोग वहाबियों की तकफ़ीर के सिलसिले में सौ फ़ीसद आप हज़रात के साथ हैं। इससे हम लोग समझ गए कि ये ग़ैर मुक़ल्लिद नहीं हो सकते, ऐसा लगता है कि सुन्नी शाफ़ई हैं और सलाम का जवाब देते हुए खड़े हो गए और हज़रत ने इंटरकाम से घर में इत्तिला देकर बहुत ही पुर तकल्लुफ़ नाश्ता और चाय मंगवाई। उस वक्त वो हज़रात उर्दू बिलकुल नहीं बोल पाते थे बल्कि सही तौर पर समझ भी नहीं पा रहे थे, इस लिए अ़रबी में गुफ़्तगू शुरू हुई।

हर चंद कि शाफ़ई हज़रात को हदीस और तफ़सीर से शग़फ़ ज़्यादा होता है मगर हमने देखा कि किसी भी मौज़ू पर वो हज़रात अगर दो या तीन हदीसें पेश करते तो हज़रत उसी उनवान पर पांच-छः हदीसें किताबों के हवालों के साथ पेश फ़रमा देते। वो हज़रात अगर कोई आयत तिलावत करते और उसकी तफ़सीर में एक या दो किताबों की इबारतें पढ़ते तो हज़रत चार पांच तफ़सीरों की इबारतें सुना देते। जिससे उन हज़रात के साथ मैं और मिस्बाही साहब भी हैरत के साथ हज़रत का मुंह तकने लगे और दिल इस ऐतिराफ़ पर मजबूर हुआ कि यह दर अस्ल इमाम अहमद रज़ा, हुज्जतुल इस्लाम और मुफ़्ती ए आज़म के फैज़ाने इल्मी का समरा है।

(2) 1974 ई की बात है जब हज़रत मुफ़्ती ए आज़म ने बिहार के ज़िला पूर्णिया का आख़िरी सफ़र फ़रमाया। इस सफ़र में हम ख़्वाजा ताशाने रज़्वियत की गुज़ारिश पर हज़रत ताजुश्शरीआ को भी हमराह होना था फिर भी ख़िदमत के लिए मौलाना ख़्वाजा मक़बूल अहमद रज़्वी मरहूम व मग़फ़ूर को मुक़र्रा तारीख़ से पांच छः दिन पहले ही बरेली शरीफ़ भेज दिया गया। मगर हज़रत मुफ़्ती ए आज़म का प्रोग्राम कलकत्ता होते हुए किशनगंज (जो उस वक़्त पुर्णिया ज़िला का सब डिवीज़न था) पहुंचने का हो गया। मौलाना मक़बूल साहब तो हज़रत मुफ़्ती ए आज़म के हमराह हो गये और ताजुश्शरीआ ने तैय किया कि वह मुक़र्रा तारीख़ की सुबह डाइरेक्ट गुवाहाटी मेल से किशनगंज पहुंचेंगे। जब मुक़र्रा तारीख़ आई तो इस्तिक़बाल के लिए सैकड़ों उलमा और अवाम किशनगंज पहुंच गए। हज़रत मुफ़्ती ए आज़म की तशरीफ़ आवरी तो कलकत्ता से सुबह पहुंचने वाली ट्रेन से हो गई मगर गुवाहाटी मेल से ताजुश्शरीआ नहीं पहुंचे। ट्रेन के कुछ मुसाफ़िरों ने इस्तिक़बाल के लिए पहुंचने वालों का हुजूम देख कर वजह पूछी तो उनको बताया गया कि इसी ट्रेन से हमारे एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाने वाले थे मगर वह नज़र नहीं आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि सूरज डूबने के क़रीब हो रहा था कि ट्रेन मुज़फ़्फ़ुरपुर पहुंची थी और हुलिया बता कर कहा कि इस शक्ल व सूरत के एक साहब बड़ी बेताबी से उतर कर नमाज़ पढ़ने लग गए थे। ट्रेन रवाना होने लगी तो भी वह साहब नमाज़ ही पढ़ते रहे। बिल आख़िर ट्रेन रवाना हो गई और वह वहीं रह गए। अगर आप लोग उन्हीं को लेने आए हैं तो यह उनका सामान, उतार लीजिये, हम लोगों ने सामान उतार लिया और हज़रत ताजुश्शरीआ कई ट्रेनें बदलते हुए शाम को पहुंच सके।

(3) हज़रत मुफ़्ती ए आज़म के विसाल के चार दिन पहले मुहर्रम के पहले अशरे की बात है, रहमानपुर ज़िला कटिहार के मुसलमानों का एक गिरोह अजमेर शरीफ़ से वापसी पर बरेली शरीफ़ हाज़िर हुआ तो हज़रत मुफ़्ती ए आज़म हद दर्जा बीमार थे। आम ज़ियारत का वक़्त होता तो हज़रत की चारपाई आंगन में लगा दी जाती, लोग आते रहते और फैज़याब होते रहते। यह देख कर उनमें से भी बहुत से हज़रात के दिल में बैअत होने की ख़्वाहिश पैदा हुई तो आपस में मश्वरा किया। उस वक़्त के ज़ेरे तालीम एक एहसान नामी नौजवान (जो आज कटिहार के सीनियर वकीलों में शुमार होते हैं) ने कहा, ''यहां मुरीद होने से क़व्वाली छोड़नी पड़ेगी इस लिए मैं तो मुरीद नहीं हूंगा'' बहर कैफ़! जब लोग अंदर जाने लगे तो यह हज़रात भी साथ हो लिये और सलाम व दस्त बोसी के बाद गुलामी में दाख़िल हो गए मगर एहसान साहब अपनी सोच पर क़ाइम रहे। वापसी के मुसाफ़हे पर कुछ लोगों ने नज़्रें पेश की और क़ुबूल हुईं मगर जब एहसान साहब का नम्बर आया तो हज़रत मुफ़्ती ए आज़म ने मना फ़रमा दिया। कुदरत को मंज़ूर था, वो लोग जिस दिन वापस रहमानपुर पहुंचे, उसी दिन रात को हुज़ूर वाला ने जामे विसाल नोश फ़रमा लिया।

छः सात महीनों के बाद फ़क़ीर की दावत पर हज़रत

ताजुश्शरीआ़ पूर्णिया बिहार पहुंचे तो सीतलपुर नामी गांव जाते हुए रास्ते में रहमानपुर पहुंचे। सूरज गुरूब हुए कोई पंद्रह बीस मिनट हो चुके थे, इस लिए नमाज़ वहीं ख़ानक़ाहे लतीफ़िया की मस्जिद में अदा की गई। इल्म होते ही पूरा गांव जमा हो गया और मुसाफ़हे व दस्त बोसी होने लगी। कई लोगों ने जिनमें एहसान साहब भी शामिल थे कुछ नज़्रें पेश कीं। अ़जब इत्तिफ़ाक़ कि सब की नज्रें क़ुबूल हुईं मगर एहसान साहब को मना फ़रमा दिया गया। हालांकि उनसे ताजुश्शरीआ़ की ना कभी मुलाक़ात थी, ना ताजुश्शरीआ़ को पता था कि हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़म ने उनकी नज्रें क़ुबूल नहीं फ़रमाई थीं, जबकि ताजुश्शरीआ़ की बीनाई कमज़ोर थी, उस पर मुस्तज़ाद यह कि शाम का मलगज़ा था, क्योंकि अभी बिजली उस गांव तक नहीं पहुंची थी। उस वक़्त एहसान साहब ने तअ़ज्जुब के साथ हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़म के नज़्र क़ुबूल ना फ़रमाने की बात सबके सामने बयान की।

जब हम लोग वहां से अपनी मंज़िल के लिए रवाना हुए तो फ़क़ीर ने हज़रत ताजुश्शरीआ़ से एहसान साहब की नज़्र ना होने का सबब जानना चाहा तो यह फ़रमाकर ख़ामोश हो गए: ''हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़म की करामत थी।''

(4) बरेली शरीफ़ में एक साहब थे मुल्ला लियाक़त अ़ली ख़ान मरहूम, हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़म के दस्त गिरफ़्ता और आ़शिक़ व शैदा थे। मौसूफ़ के बक़ौल उन्होंने पीर व मुर्शिद के विसाल के कुछ दिनों बाद आपके ख़्वाब में देखा तो ज़ार व क़तार रोने लगे। पीर व मुर्शिद ने तसल्ली के कलिमात कह कर चुप कराया, पूछने पर फ़रमाया: आख़िर इतना रो क्यों रहे हो? मुल्ला अ़र्ज़ गुज़ार हुआ: हुज़ूर मेरी दुनिया और दीन सब कुछ तो आप थे, मैं अपनी हर हाजत में आपसे रुजू करता था और हाजत से सिवा पाता था। आप तो पर्दा फ़रमा गए, अब मैं क्या करूं और कहां जाऊं? मुफ़्ती ए आ़ज़म ने इरशाद फ़रमाया: ''अख़्तर मियां हैं ना, उन्हीं के पास'' और मेरी आंख खुल गई। हज़रत मुफ़्ती ए आ़ज़म ताजुश्शरीआ़ को ''अख़तर मियां'' कहते थे।

(5) सहीह बुख़ारी में है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला जब किसी बंदे को महबूब बना लेता है तो जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाता है: मैं फुलां बंदे से मुहब्बत करता हूं तुम भी उससे मुहब्बत करो! तो जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं और अहले आसमान में मुनादी करते हैं कि फुलां आदमी से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत फ़रमाता है तुम सब भी उससे मुहब्बत करो तो अहले आसमान भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं फिर तो ज़मीन पर भी उसकी मक़बूलियत हो जाती है।

इस आईने में भी देखिए तो हज़रत ताजुश्शरीआ़ की ज़ात अपने ज़माने में बे नज़ीर रही और विसाल के बाद तो पूरी दुनिया ने देखा कि अपने तो अपने ही थे, बेगानों को भी मानना और कहना पड़ा इसकी मिसाल कम से कम बर्रे सग़ीर की तारीख़ में तो नहीं मिलती। इस लिए हम हदीस पाक:

अल्लाह तआ़ला को जब मंजूर होगा कि दुनिया से इल्म उठा ले तो उलमा को उठा लेगा। की रोशनी में इमाम अहमद रज़ा, हुज्जतुल इस्लाम और मुफ़्ती ए आ़ज़म के इस इल्म व अ़मल और रूहानियत के वारिस व अमीन के उठ कर चल देने पर रोयें नहीं तो क्या करें?

अल्लाह तआ़ला तमाम अहले सुन्नत को बिल उलूम औरह हज़रत के जानशीन हज़रत अ़सजद मियां को बिल खुसूस सब्र व शकेब अ़ता फ़रमाए, अपने महबूबों के सदक़े इस महबूब बंदे हज़रत ताजुश्शरीआ़ के मरक़दे अनवर पर ज़्यादा से ज़्यादा रहमत व अनवार की बरखा बरसाए और हमें उनके फ़ुयूज़ व बरकात से नवाज़े आमीन सुम्मा आमीन।

☆ ☆ ☆